ताज़िया शरीफ़ के जाइज़ होने पर दलाइल से भरपूर शानदार किताब

ताज़िया शरीफ़ का शरई हुक्म

अज़ क़लम

सय्येदना
अमीरे अहले सुन्नत
हुज़ूर मुनाज़िरे आज़म
मुजद्दिद मुरादाबादी
रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

पेशकर्दा

All India Mission Mojaddid Morada Badi
All India
MISSIONMOJADDID
MORADABADI

MADAARI MEDIA

دم مدار بیڑا پار

The Silsila e Aaliya Madaariya Social Platform

سلسلۂ مداریہ کے بزرگوں کی سیرت و سوانح

سلسلۂ عالیہ مداریہ سے متعلق کتابیں

سلسلۂ مداریہ کے علماء کے مضامین تحریرات

سلسلۂ مداریہ کے شعراء اکرام کے کلام

حاصل کرنے کے لئے اس ویب سائیٹ پر جائیے

www.MadaariMedia.com

@MadaariMedia

@MadaariMedia

@MadaariMedia

@MadaariMedia

Authority : Ghulam Farid Haidari Madaari

786 . 917

सय्येदना हुज़ूर इमामे आली मक़ाम शहीदे आज़म हज़रते इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़िकरे शहादत के सामाने तशहीर और *तरीका ए एलान पर एक तहक़ीक़ी किताब*

ताज़िया शरीफ़ का शरई हुक्म

अज़

सय्येदना अमीरे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मुहद्दिसे अज़ीम मुफस्सिरे फ़हीम मुतरजिमे कुरआने करीम हुज़ूर मुनाज़िरे आज़म गोसे ज़माँ अल्लामा हाफ़िज़ क़री मुफ़्ती शाह

सय्यद मोहम्मद इन्तेख़ाब हुसैन

क़दीरी अशरफ़ी मदारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

मय इज़ाफ़ा अज़

हुज़ूर ख़तीबे आज़म शेरे अहले सुन्नत पीरे तरीक़त वारिसे उलूमे हुज़ूर मुजद्दिद मुरादाबादी अल्लामा हाफ़िज़ क़ारी मुफ़्ती शाह पीर

सय्यद मोहम्मद इन्तेसाब हुसैन क़दीरी अशरफ़ी मदारी

सज्जादानशीन आसताना ए आलिया क़दीरिया हुज़ूर मुजद्दिद मुरादाबादी

नाशिरः आल इण्डिया मिशने हुज़ूर मुजद्दिद मुरादाबादी (माजेगाऊँ महाराष्ट्र)

All INDIA MOJADDID MORADABADI
MISSION MOJADDID MORADABADI

इन्तेसाब

अपने पांच मुरशिदीन केराम के नाम जिनसे फ़क़ीरे क़दीरी को शरफ़े खिलाफ़त है।

सय्येदना हुजूर किब्ला–ए–आलम शेखुल अरबे वलअजम मुरशिद मोहतरम कुतबे दौराँ हुजूर अल्लामा अल्हाज शाह सय्यद मोहम्मद अब्दुर्रशीद मियाँ नबीरा ए सय्येदना हुजूर अल्लाहु मियाँ पीलीभीत शरीफ।

सय्येदना हुजूर इमामे अहले सुन्नत अशरफुल मशाइख़ वली ए कामिल हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अल्हाज सय्यद मोहम्मद मुख़्तार अशरफ़ अशरफ़ी जीलानी किछोछवी।

सय्येदना हकीमुल उम्मत बाबाऐ कौम व मिल्लत नूर निगाहे सय्येदना हुजूर मदारूल आलमीन हज़रत अल्लामा हकीम सय्यद मौहम्मद वली शिकोह जाफ़री मदारी।

सय्येदना सदरूल्उलमा हज़रत अल्लामा मुफ़्ती सय्यद मोहम्मद ज़फ़रूद्दीन क़ादरी नईमी ख़ल्फ़े अकबर सय्येदना हुजूर सदरुल–अफ़ाज़िल मुरादाबाद शरीफ़।

शेख़े तरीक़त रहनुमाऐ मिल्लत हज़रत अल्लामा मौलाना अल्हाज शाह सय्यद मोहम्मद इख़्तेसासुद्दीन अहमद क़ादरी नईमी ख़ल्फे सानी सय्येदना हुजूर सदरुल–अफ़ाज़िल मुरादाबाद शरीफ़

रज़ियल्लाहु अनहुम अजमाईन

इन्तेखाब

अल्हम्दुलिल्लाहिल अहदिल हमीदिल वह्हाब, अल्बसीरिल क़दीरित्तव्वाब, वस्सलातो वस्सलामो अला हबीबिहिल अशरफ़िर्रशीदिल इन्तेख़ाब, ला नज़ीरा लहू वला मसीला लहू वला मिसाला लहू वला जवाब, व आलिही व असहाबिही इला योमिल हिसाब।

अम्मा बाद। कुराने करीम में दो शब्द आयह हैं—अहले बैत और ज़विल कुर्बा। इन के मआनी क्या हैं? अहले बैत, अहले ख़ाना और घरवाले। तीनों अल्फ़ाज़ हम मआनी हैं। ज़विल कुर्बा क़राबत दार और रिशतेदार यह तीनों लफ्ज़ भी हम मआनी हैं। दीने इस्लाम में प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रिशतेदार होना {ज़विल कुर्बा} और अहले ख़ाना होना {अहले बैत} यह दारैन की सआदतों का ज़ामिनो—ज़िम्मेदार है। कुराने करीम में यह दोनो निस्बतें बड़ी शान के साथ बयान फ़रमाई गई हैं। चुनांचे अल्लाह तआला ने इन दोनों निस्बतों की अज़मतों का ऐलान व इज़हार फ़रमाया। इरशादे रब्बे क़दीर है :

आयतः (तर्जमा)—बस चाहता है अल्लाह कि दूर फ़र्मा दे तुम से नापाकी को ऐ नबी के घरवालो! और पाक रखे तुम को खूब पाक। {बसीरतुल ईमान सफ़हा 1022 पारा 22}

यह आयते तत्हीर है, अब इस इरशादे बारी की तफ़्सीर भी मुलाहेज़ा फ़रमालें ताकि आपको प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अहले बैत, अहले खना, घारवालों की अज़मत भी मालूम हो जाए और यह भी मालूम हो जाए कि अहले बैत कौन हैं।

हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़वाजे मुताहरात आपकी अहले बैत हैं। हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घरों को उनकी तरफ़ निस्बत फ़रमाया गया। बुयूत की निस्बत इन हज़रात की तरफ़ मिल्कियत वाली निस्बत नहीं बल्कि रहने वाली निस्बत है। क्यूंकि हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु

All India Mission Mojaddid Moradabadi

अलैहि वसल्लम की इमलाक व जायदाद बादे विसाल शरीफ़ वक़्फ़ हैं इन में मीरास जारी नहीं होती। हक़ यह है कि हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़वाजे पाक और औलादे पाक सब अहले बैत हैं। औलाद का अहले बैत होना हदीसे किसा से मालूम होता है। अज़वाजे पाक खुसूसन हज़रते आयशा सिद्दीक़ा तय्यहबा ताहेरा का अहले बैत होना इस आयते करीमा से मालूम हुआ।

अज़वाजे मुताहरात यक़ीनन् हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अहले बैत हैं। क्यूंकि तमाम आयाते करीमा हज़राते अज़वाजे मुताहरात से मुख़ातिब हैं। आयते करीमा का अव्वल ख़िताब अज़वाजे मुताहरात से है, गोया कि नुज़ूले आयते करीमा अज़वाजे मुताहरात के हक़ में है और इन्हीं से तखातुब है मगर औलादे किराम भी बतरीक़े औला इस फ़ज़ीलत की मुस्तहिक़ है जिसका बहुत सी अहादीसे करीमा में ज़िक्र फ़र्माया गया। सय्यदना हज़रते इब्ने असाकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर इमामे जाफ़रे सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से और उन्होंने सय्येदना हज़रते इमामे मोहम्मद बाक़र रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत फ़रमाया कि हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुबाहले में सय्येदना अमीरूल मोमिनीन हज़रते अली, सय्यहदताना हज़रते ख़ातूने जन्नत फ़ातिमा ज़ेहरा, सय्येदना हज़रते इमामे हसन, सय्येदना हज़रते इमामे हुसैन के साथ हज़राते खुल्फ़ाए सलासा, सय्येदना अमीरूल मोमिनीन हज़रते अबुबक्र सिद्दीक़े अकबर, सय्येदना अमीरूल मोमिनीन हज़रते उमर फ़ारूक़े आज़म, सय्येदना अमीरूल मोमिनीन हज़रते उस्माने ग़नी जुन्नूरैन और इनकी औलादे अमजाद रज़ियल्लाहु अन्हुम को भी साथ ले गये थे। {तफसीरे रूहुल मआनी शरीफ़} यह हज़राते खुल्फा ए सलासा भी अहले बैते मुस्तफा में शामिल व दाख़िल हैं। इस आयते करीमा में अहले बैते मतुस्तफ़ा को नसीहत फ़माई गई है ताकि वोह गुनाहों से बचें और

ALL INDIA MISSION MORADA BADI
MISSIONMOJADDID MORADABADI

तक़्वा व परहेज़गारी के पाबन्द रहें। गुनाहों को नापाकी से और परहेज़गारी को पाकी से ताबीर फ़रमाया गया है क्यूंकि गुनाहों का मुर्तकिब इन से ऐसा ही मुलव्वस होता है जैसा कि जिस्म निजासतों से। इस तरज़े कलाम से मकसूद यह है कि अहले अक्ल को गुनाहों से नफ़रत दिलाई जाए और तक़्वा और परहेज़गारी की तरग़ीब दी जाए। इस आयते करीमा का एक मतलब यह भी है कि अल्लाह तआला अहले बैते मुस्तफ़ा को गुनाहों और बद अख़्लाक़ियों की निजासत में आलूदा न होने दे। यह मतलब हरगिज़ नहीं कि मआज़ल्लाह अब तक गुनाहगार थे अब पाकी अता हुई। हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़वाजे मुताहरात व औलादे पाक गुनाहों से पाक हैं। सय्येदतना उम्मुल्मोमिनीन हज़रते आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा का सय्येदना हज़रते अमीरूल मोमिनीन मौला अली रज़ियल्लाहु अन्हु से जंग करना गुनाह न था बल्कि इज्तेहादी गल्ती थी क्यूंकि बहुक्मे कुरान वोह गुनाहों से महफूज़ हैं। ख़ताए इज्तेहादी पर मुज्तहिद को सवाब मिलता है।

(तफसीर कदीरी बदीई मय फ़वाईदे रशीदया सफ़हा 1023)

तफ़सीर रूहुलमआनी शरीफ़ की जो हदीस शरीफ़ मज़कूर हुई उसके रावी खुद आले रसूल हैं। इन तमाम तफ़सीरी तफ़सीलात के बाद अहले बैत का मफ़हूम बख़ूबी समझ में आ जाता है कि अहले बैत में प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तमाम अज़वाजे मुताहरात और औलादे अमजाद के साथ–साथ आपके दामाद और आपके खुस्र हज़रात भी शामिल व दाख़िल हैं और उनकी तहारत व पाकीज़गी का ऐलान अल्लाह तआला ने फ़रमाया है।

अब अगर कोई इन तमाम अहले ख़ाना में से किसी की बुराई करता है तो वोह कुराने करीम का बाग़ी और अल्लाह तआला का बहुत बड़ा मुख़ालिफ़ है और अल्लाह तआला से मुखालफ़त करके दोनों जहाँ में नुक़सान के अलावा कुछ हत्थे न लगेगा।

आले रसूल क्यों न मुतह्हर हों फिर भला
तत्हीर का गवाह कलामे मजीद है

आयत—{तर्जमा}आप फरमाईये नहीं माँगता मैं तुम से इस पर कोई अजर मगर महब्बत रिशतेदारों की।

{बसीरतुल ईमान सफ़हा 1194 पारा 25}

यह आयते मवद्दत है, अब इस आयते करीमा की तफ़सीर भी मुलाहेज़ा फ़रमाया ताकि आपको रिशतेदारों की लिस्ट व फ़ेहरिस्त भी मालूम हो जाए और अहले बैत, ज़विल कुर्बा" का सही मफ़हूम व मतलब ज़ेहन नशीन हो जाए।

तफ़सीर : मतलब यह है कि मैं हिदायत व इरशाद पर कुछ उजरत नहीं चाहता लेकिन क़राबत के हुकूक़ तुम पर वाजिब हैं इनका लेहाज़ करो और मेरे क़राबत वाले तुम्हारे भी क़राबती हैं उन्हें तकलीफ़ न दो। सय्येदना हज़रते सअद बिन जबीर रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि कराबत वालों से मुराद हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आले पाक है (बुख़ारी शरीफ़)। अहले क़राबत से कौन कौन मुराद हैं? इस में कई कौल हैं एक तो यह कि इस से मुराद सय्येदना अमीरूल मोमिनीन हज़रते मौला अली व सय्येदतना खातूने जन्नत हज़रते फातिमा ज़ेहरा और सय्येदैना हजराते ह़सनैने करीमैन रज़ियल्लाहु अन्हुम हैं। एक क़ौल यह है कि आले अली आले अक़ील, आले जाफ़र व आले अब्बास मुराद हैं। और एक क़ौल यह है कि हुजूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वोह अक़ारिब मुराद हैं जिन पर सदक़ा ह़राम है। और वोह मुख्लेसीन बनी हाशिम व बनी मुत्तलिब हैं। हुजूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़वाजे मुताहरात आप के अहले बैत में दाखिल हैं। हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मह़ब्बत और आपके अक़ारिब की महब्बत दीन के फ़राइज़ में से है। (तफ़सीरे जमल शरीफ़

व ख़ाज़िन शरीफ़ वगैरह) और जो आले रसूल पाक से महब्बत करेगा हम और ज़्यादा उसे आमाले खैर की तौफ़ीक़ देंगे जो इन्सानी ताक़त से बाहर मालूम होते हों।

यह आले रसूल से महब्बत पर इनामात की बरसात आपने मुलाहेज़ा फरमाई अब आले रसूल की अदावत पर क़हरे क़ह्हार की बरसात भी मुलाहेज़ा फरमालें। **हदीस शरीफ़:** हुजूरे अनवर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो न पहचाने हक़ मेरी औलाद का तो वोह तीन बातों में से एक का ज़रूर हामिल है या तो मुनाफ़िक़ है या हरामी है या हैज़ी बच्चा है। **हदीस शरीफ़** : 6 शख़्स हैं जिन पर अल्लाह ने लानत फ़रमाई है। उन में से एक वोह है जो मेरी औलाद से वोह चीज़ हलाल रखे जो अल्लाह तआला ने हराम फ़रमाई है। दुशमनाने आले रसूल मलऊन हैं और मुनाफ़िक़ है या हरामी है या हैज़ी बच्चा है। इन अहादीसे करीमा के आइने में दुशमनाने आले रसूल अपनी तस्वीर देंखे। हुजूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अहले बैत व अक़ारिब की महब्बत व ताज़ीम व हुक़ूक़ शनासी उम्मत पे लाज़िम व वाजिब और जुज़्वे ईमान है। आले रसूल से दरजा बदरजा महब्बत रखना हक़ीक़त में हुजूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की महब्बत की शाख़ और अलामत है। (तफ़सीरे क़दीरी बदीई सफ़हा 1195 पारा 25)

इन दोनों आयाते करीमा और इन की तफ़सीर से यह बात रोज़े रौशन से कहीं ज़्यादा मुनव्वर हो गई कि प्यारे नबी के तमाम रिशतेदार और तमाम घर वाले अज़मतों रिफ़अतों के अमीन हैं और प्यारे नबी के रिशतेदारों से महब्बत करना ईमानियात में दाख़िल है और कुरआनी तालीमात व अहकाम के ऐन मुताबिक़ है।

सिद्दीक के उमर के जो होंगे गनी के साथ
होंगे वोही हुसैनो हसन और अली के साथ

आयत:—(तर्जमा)—फिर जो हुज्जतबाजी करे आप से ईसा के

All India Mission Mojaddid Moradabadi

बारे में इसके बाद कि आगया है आपके पास इल्म तो आप फ़रमा दीजिये कि आ जाओ बुलाते हैं हम अपने बेटों को और तुम अपने बेटों को और अपनी औरतों को और तुम्हारी औरतों को और अपनी जानों को और तुम्हारी जान को, फिर हम गिड़-गिड़ा कर दुआ करते हैं तो डालते हैं हम अल्लाह की लानत झूठों पर। (बसीरतुल ईमान सफहा 140 पारा 3)

यह आयते मुबाहेला है अब इस आयते करीमा की तफ़सीर भी मुलाहज़ा फ़रमायें ताकि आपको मज़ीद मालूम हो जाए कि प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने बेटों अपनी औरतों और अपनी जानों में किस किस को शुमार फरमाया है और तफ़सीरे रूहुल मआनी शरीफ़ के हवाले से जो हदीसे पाक मज़कूर हैं वोह औलादे रसूल से मरवी है।

जब हुजूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नजरानी नसारा को यह आयते करीमा पढ़कर सुनाई और मुबाहले की दावत दी तो वोह कहने लगे कि हम मशवरा करलें कल आपको जवाब देंगे जब वोह जमा हुए तो अपने सबसे बड़े आलिम आक़िब से कहा कि आपकी क्या राय है? उसने कहा कि गिरोहे नसारा! तुम पहचान चुके हो कि मुहम्मद नबी व रसूल हैं अगर तुमने उनसे मुक़ाबला किया तो सब हलाक हो जाओगे अब अगर नसरानियत पर क़ायम रहना चाहते हो तो उन्हें छोड़ो और घर लौट चलो। यह मशवरा होने के बाद वोह हुजूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमते पाक में हाज़िर हुए तो उन्होंने देखा कि हुजूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गोद में सय्येदना हुज़ूर शहीदे आज़म इमामे आली मक़ाम हज़रते इमामे हुसैन हैं और दस्ते मुबारक में सय्येदना हुज़ूर पुरनूर फख़्रे ज़मन हज़रते इमामे हसन का हाथ है और सय्येदतना ख़ातूने जन्नत हज़रते फ़ातेमा ज़ेहरा और सय्येदना अमीरूल मोमिनीन मौला ए काएनात हज़रते अली

ALL INDIA MISSION MOJADDID MORADA BADI

मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हुम हुजूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बीच में हैं। हुजूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन से फ़रमा रहे हैं कि जब मैं दुआ करूँ तो तुम सब आमीन कहना। नजरान के सबसे बड़े पादरी ने जब इन हज़रात को देखा तो कहने लगा, ऐ गिरोहे नसारा! मैं ऐसे चेहरे देख रहा हूँ कि अगर यह हज़रात अल्लाह तआला से पहाड़ के हटा देने की दुआ करें तो अल्लाह तआला पहाड़ को उसकी जगह से हटा देगा इनसे मुक़ाबला न करना वरना हलाक हो जाओगे और क़यामत तक ज़मीन पर कोई नसरानी बाक़ी न रहेगा। यह सुनकर नसारा ने हुजूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमते आली में अर्ज़ किया कि मुबाहले की तो हमारी राय नहीं है। आख़िरकार उन्होंने जिज़्या (टैक्स) देना मन्जूर किया मगर मुबाहले के लिए तय्यार न हुए। हुजूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उसकी क़सम जिसकी कुदरत में मेरी जान है नजरान वालों पर अज़ाब क़रीब ही आ चुका था, अगर वोह मुबाहला करते तो बन्दरों और ख़िन्ज़ीरों की सूरतों में मस्ख़ कर दिये जाते और जंगल आग से भड़क उठता, नजरान और वहाँ के रहने वाले परिन्दे तक नेस्तो नाबूद हो जाते और एक साल के अर्से में तमाम नसारा हलाक हो जाते। नवासों को बेटा और बेटी को निसा कह सकते हैं, हज़रते अली बेटों में दाख़िल हैं कि छोटे भाई थे। इब्ने असाकर ने बरिवायत सय्येदना हुजूरे इमामे जाफ़रे सादिक़ व सय्येदना हुजूरे इमामे मुहम्मद बाक़र रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत की कि हुजूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुबाहले में इन चारों हज़रात के साथ साथ हज़राते ख़ुलफ़ा ए सलासा सय्येदना हज़रते अबु बक्र सिद्दीक़े अकबर व सय्येदना हज़रते उमर फारूक़े आज़म व सय्येदना हज़रते उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु अन्हुम और उनकी औलाद को भी साथ ले

All India Mission Mojaddid Moradabad

गये थे। (रूहुलमआनी शरीफ़) यह हज़राते सलासा भी अहले बैते मुस्तफ़ा हैं।

(तफसीरे क़दीरी बदीई मय फ़वाइदे रशीदिया सफ़हा 142)

मुबाहले में थे चारों ख़लीफ़ा और ज़ेहरा
हसन हुसैन थे और खुद जनाब सरवरे दीं

कुराने करीम की इन तीन आयाते करीमा ने हमें अहले बैते मुस्तफ़ा, रिशतेदाराने मुस्तफ़ा, क़राबत दाराने मुस्तफ़ा, आले रसूल, औलादे रसूल की अज़मतों का सबक़ दिया और उनकी महब्बत व मवद्दत का दर्स दिया। प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घरवालों से महब्बत करने का हुक्म बराहे रास्त अल्लाह तआला ने दिया है और बेफज़्लेही तआला यही तमाम अहले सुन्नत व जमाअत का अक़ीदा है।

अब अहादीसे करीमा में देखें कि अहले ख़ाना घरवालों, ज़विल कुर्बा रिशतेदारों, क़राबत दारों के तअल्लुक़ से क्या क्या गुल बूटे जड़े हुए हैं जिस से ईमान की फ़स्ले बहार तरो ताज़ा हो जाए और दिल की दुनिया में इत्रबेज़ मस्त हवायें चलें और दिमाग़ हरा भरा हो जाये।

हदीस शरीफ़ः—(तर्जमा) सय्येदना हज़रते अबुज़र रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है बेशक उन्होंने फ़रमाया और वोह पकड़ने वाले थे काबे शरीफ़ के दरवाज़े को कि मैंने सुना प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कि ख़ब्रदार! मेरे अहले बैत की मिसाल तुम में हज़रते नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती की तरह है, जो सवार हो गया उस में तो निजात पा गया और जो रह गया सवार होने से तो हलाक हो गया। (मिशकात शरीफ़)

मामून होगा नूह़ की कशती के मिस्ल तू
कशती में अहले बैत की खुद को बिठा के देख

हदीस शरीफ़ः—(तर्जमा) फ़रमाया प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने, महब्बत करो तुम अल्लाह तआला से इसलिये कि वोह रोज़ी देता है तुमको अपनी नेमत से और मुझसे महब्बत करो

अल्लाह तआ़ाला की महब्बत की वजह से और मेरे अहलेबैत से महब्बत करो मेरी महब्बत की वजह से। (तिरमिज़ी शरीफ़)

प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कैसा ह़सीन सिलसिला बयान फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला से तो महब्बत इसलिये करो कि वोह तुम्हें खाने पीने के लिये अपनी नेमतें अ़ता फ़रमाता है और अल्लाह तआ़ला से मह़ब्बत की वजह से मुझसे मह़ब्बत करो कि अल्लाह तआ़ला जो तुम्हें रोज़ी देता है वोह सबको मेरे ही दस्ते करम से मिलती है और मेरी मह़ब्बत का तक़ाज़ा और मेरी महब्बत का हक़ यह है कि मेरे तमाम घर वालों से तहे दिल से महब्बत करो। गोया कि महब्बते अहले बैत अलामत है मह़ब्बते रसूल की और मह़ब्बते रसूल दलील है मह़ब्बते खुदा की।

हदीस शरीफ़:-(तर्जमा) सय्येदना हज़रते ज़ैद इब्ने अरक़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है उन्होंने फ़रमाया कि एक दिन हम में रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बहैसियते ख़तीब खड़े हुए उस पानी पर जिसे खुम कहा जाता है, मक्के शरीफ़ और मदीने शरीफ़ के दर्मियान, तो प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआ़ला की ह़म्द व सना की और वाज़ व नसीहत फ़रमाई, फिर फ़रमाया कि ह़म्द व सना के बाद ऐ लोगो! ख़बरदार! मैं बशर हूँ मेरे रब का फ़रिसतादा मेरे पास आये तो मैं उसका बुलावा क़ुबूल कर लूँगा और मैं तुम में दो अज़ीम चीज़ें छोड़ता हूँ उन में पहली तो अल्लाह तआ़ला की किताब (क़ुराने करीम) है जिसमें हिदायत और नूर है, तो तुम अल्लाह की किताब लो और मज़बूती से थाम लो, फिर किताबुल्लाह पर उभारा और उसकी रग़बत दिलाई, फिर फ़रमाया (इन दोनों में की दूसरी चीज़) मेरे अहले बैत हैं मैं अपने अहले बैत के बारे में तुम्हें अल्लाह तआ़ला से डराता हूँ। (मुस्लिम शरीफ़)

वोह हिदायत पायहगा हो जायहगी उसकी निजात
आमिले क़ुरआँ, अमीने अज़मते आले रसूल

All India Mission Mojaddid Moradabadi

प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत को हुक्म फ़रमाया कि दो चीज़ें तुम में छोड़े जा रहा हूँ एक तो कुरआने करीम और दूसरे अहले बैते किराम। इन दोनों से वाबस्तगी रखना और अहले बैत के बारे में तुम्हें डराता हूँ। यह जुमला मुक़र्रर फरमाकर क़न्दे मुकर्रर फ़रमा दिया कि कुरआने करीम को तो लोग मानने का ऐलान करेंगे मगर अहले बैत की अज़मतों से न सिर्फ़ यह कि इनहेराफ़ करेंगे बलिकि उनका ख़ून बहाऐंगे। चुनाँचे सय्येदना हज़रते फ़ारूक़े आज़म सय्येदना हज़रते उस्माने ग़नी सय्येदना हज़रते मौला अली सय्येदना हज़रते इमामे हसन सय्येदना हज़रते अली अकबर सय्येदना हज़रते अली असग़र वग़ैरहुम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने जामे शहादत ही नौश फ़रमाया है। यह बात भी नज़र में रहे कि अहले सुन्नत ही में कुरआने करीम के हुफ़्फ़ाज़ की कसरत मिलेगी और यही कुराने करीम पर अमल पैरा भी हैं और इन्हीं के हाथों में तमाम अहले बैते इज़ाम का दामने करम भी है। यह अहले सुन्नत की हक़्क़ानियत की रौशन दलील है।

चूँकि इस किताब "ताज़िया शरीफ़ का शरई हुक्म" का मौज़ू अहले बैते रसूल के फ़र्दे वहीद हज़रते मौला अली के फ़रज़न्दे सईद सय्येदना हुज़ूर इमामे आली मक़ाम हुसैने शहीद रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़ाते गिरामी है और उनके तअल्लुक़ से होने वाली महाफ़िल व मजालिस, मरासिम, ताज़िया शरीफ़ व फ़ातेहा शरीफ़, लँगर व सबील और ढोल ताशा है, इसलिये इनके फ़ज़ाईल भी अहादीसे करीमा की रौशनी मैं नक़ल करके इस किताब के हुस्न में और चार चाँद लगा लिए जाएँ। यों तो—

बच्चा बच्चा उन के घर का नूर की तस्वीर है
सरवरे कौनैन का नूरानी घर भर देखिये

हदीस शरीफ़:—(तर्जमा) सय्यहदुना हज़रते अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है उन्होंने फ़रमाया कि प्यारे नबी सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि आपको अपने अहले बैत में कौन ज़्यादा महबूब है? फ़रमाया ह़सन व हुसैन। और प्यारे रसूल हज़रते फ़ातिमा ज़ेहरा से फ़रमाया करते थे मेरे पास मेरे दोनों बेटों को लाओ, फिर दोनों को सूँघते थे और अपने आप से लिपटाते।

सूँघते थे जिसे सरकारे दोआलम अक्सर
वोह हुसैन इब्ने अली जिनका महकता था बदन

हदीस शरीफ़ः–(तर्जमा) सय्येदना हज़रते अनस रज़ियल्लाहु अन्हो से मरवी है उन्होंने फ़रमाया कि सय्येदना हज़रते इमामे हसन इब्ने मौला अली से ज़्यादा कोई प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुशाबेह न था और हज़रते इमामे हुसैन के बारे में भी फ़रमाया के प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हमशक्ल थे। (बूखारी शरीफ़)

वो शक्ले हसन हो या शक्ले हुसैनी
यह है नूर वाली वोह है नूर वाली

हदीस शरीफ़ः–(तर्जमा) प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रते मौला अली और सय्येदतना हज़रते फ़ातिमा और हज़राते ह़सनैने करीमैन रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के लिए फ़रमाया मैं उनसे लड़ने वाला हूँ जो इन से लड़े। मैं उन से सुलह करने वाला हूँ जो इन से सुलह करे। (तिरमिज़ी शरीफ़)

जो दुशमने हुसैन वोही दुश्मने नबी
सरकार की ह़दीस में यह भी वईद है

हदीस शरीफ़ः(तर्जमा) प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रते इमामे ह़सन व हज़रते इमामे हुसैन जन्नती जवानों के सरदार हैं। (तिरमिज़ी शरीफ़)

जन्नत का ताजदार हुसैने शहीद है
उन का अ़दु यक़ीनी जहन्नम रसीद है

हदीस शरीफ़ः–(तर्जमा) सय्येदना हज़रते उसामा इब्ने ज़ैद रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी उन्होंने फ़रमाया कि मैं एक रात एक

All India Mission Mojaddid Moradabadi

ज़रूरत से बारगाहे नबवी में हाज़िर हुआ तो हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस तरह तश्रीफ़ लाए कि आप गोदी में कुछ लिए हुए हैं और मैं न जानता था कि वोह क्या चीज़ है, पस जब मैं अपनी ज़रूरत से फ़ारिग़ हुआ तो मैंने अर्ज़ किया कि यह आपकी गोद में क्या है? प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने गोद को खोल दिया। हज़राते हसनैने करीमैन प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़ानों पर थे तो फ़रमाया कि यह दोनों मेरे बेटे मेरी बेटी के बेटे हैं। ऐ मेरे अल्लाह तआला मैं इन दोनों से महब्बत फ़रमाता हूँ तू भी इनसे महब्बत फ़रमा, और उन से भी महब्बत फ़रमा जो इन दोनों से महब्बत करे। (तिरमिंज़ी शरीफ़)

कितनी फ़ज़ों है दोस्तों अज़मत हुसैन की
हर दिल में जलवागर है महब्बत हुसैन की
हुब्बे हुसैन अस्ल में हुब्बे हबीबे हक़
हुब्बे हबीबे हक़ है महब्बत हुसैन की

हदीस शरीफ़:—(तर्जमा) सय्येदना हज़रते बुरीदा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी उन्होंने फ़रमाया कि प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमें खुतबा दे रहे थे कि अचानक हज़राते हसनैने करीमैन आयह, वोह दोनों सुर्ख़ धारीदार क़मीज़ें पहने हुए थे, चलते थे और गिर जाते थे, तो प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मिम्बरे मुबारका से (खुतबा छोड़ कर) बाहर आये तो दोनों शाहज़ादों को उठा लिया और अपने सामने बिठा लिया, फिर इरशाद फ़रमाया कि सच फ़रमाया अल्लाह तआला ने "बस तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद फ़ित्ना हैं" मैंने इन दानों शाहज़ादों को देखा कि चलते हैं और गिर जाते हैं तो मैं सब्र न कर सका यहाँ तक कि मैंने बयान बन्द फ़रमा दिया और इन दोनों शाहज़ादों को उठा लिया। (अबु दाऊद शरीफ़)

कर दिया मौकूफ़ खुतबा उनकी ख़ातिर आपने
यह अनोखी अज़मते शब्बीरो शब्बर देखिये

All India Mission Mojaddid Moradabadi

हदीस शरीफ़:–(तर्जमा) सरकारे दोआ़लम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि हुसैन मुझसे हैं और मैं हुसैन से हूँ, अल्लाह तआला उससे मह़ब्बत फ़रमाये जो हुसैन से मह़ब्बत करे और हुसैन ज़्यादा नस्ल चलाने वालों में से एक हैं। (तिरमिज़ी शरीफ़)

नस्ले यज़ीद और ज़्यादा हो गई फ़ना
चारों तरफ़ है नस्ले सिया़दत हुसैन की

यहाँ चन्द अह़ादीसे करीमा के तर्जमे पेश करने की सआ़दत ह़ासिल की है, तफ़सीली फ़ज़ाइले हुसैनी "मदारी **शरीफ़**" में देखें। अब चन्द अह़ादीसे करीमा वोह भी मुलाहेज़ा फ़रमालें जिन में प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सय्येदना हुज़ूर शहीदे आज़म इमामे आली मक़ाम हज़रते इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु की अज़मते शहादत, शोहरते शहादत और मक़ामे शहादत का ज़िक्र अपनी हयाते ज़ाहिरी ही में फ़रमा दिया है और मुसलमानों पर यह बात भी वाज़ेह हो जाए कि शहादते हुसैनी को इस्लाम और मुसलमानों में ज़माना ए नबवी ही से एक अहम मक़ाम और शोहरत हासिल है और यह मक़ामे शहादत उनका मुक़द्दर था।

हदीस शरीफ़:–(तर्जमा) सय्यहदतना हज़रते उम्मे फ़ज़्ल रज़ियल्लाहु अ़न्हा से मरवी वोह इरशाद फ़रमाती हैं कि एक रात मैंने ख़्वाब में देखा कि हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जिस्मे पाक का एक टुकड़ा काटा गया है और उसको मेरी गोद में रख दिया गया है। वोह बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुईं और यह ख़्वाब अर्ज़ किया, आक़ाए दो जहाँ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि तुमने बड़ा ही मुबारक ख़्वाब देखा है इन्शाअल्लाह (मेरी बेटी) फ़ातेमा बेटे को जन्म देगी तो वोह तुम्हारी गोद में रहेगा। फिर हज़रतें फ़ातेमा ने हज़रते इमामे हुसैन को जन्म दिया तो वोह मेरी गोद में रहे जैसा कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि

ALL INDIA MISSION MORADABADI MISSIONMOJADDID MORADABADI

वसल्लम ने फ़रमाया थ। तो एक दिन मैं रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुई तो मैंने हज़रते इमामे हुसैन को आपकी आग़ोश में दिया फिर मेरी तवज्जो बट गई तो अचानक मैंने देखा कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चश्माने करम आँसू बहा रही हैं मैं ने अर्ज़ किया कि मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान या नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क्या बात है? फ़रमाया जिबराईल अलैहिस्सलाम मेरे पास आये तो मुझे ख़बर दी कि बेशक मेरी उम्मत अनक़रीब मेरे इस बेटे को क़त्ल करेगी। मैंने अर्ज़ किया इस (हुसैन) को? फ़रमाया हाँ और जिबराईल लाए मेरे पास वहाँ की मिट्टी से कुछ सुर्ख़ मिट्टी। (दलाइले नुबुव्वत, मिश्कात शरीफ़)

इन अहादीसे करीमा में आपने वाक़्या ए शहादत की तस्वीर देख ली कि यह एक तैशुदा प्रोग्राम था और मशिय्यते ईज़दी थी कि यह मक़ामे बुलन्द आले रसूल को मिले, तो मिल गया और खूब मिल गया और ऐसा मिला कि :

हामिये दीने खैरूल वरा आ गए
करबला में शहे करबला आ गए

"चीज़ें अपनी ज़िदों से भी पहचानी जाती हैं" इस उसूल के तहत यज़ीदे पलीद की मकरूह सूरत भी देखली जाये कि अहादीसे करीमा, रिवायाते तय्यिबा यज़ीदे पलीद को क्या हैसियत देती हैं और दुश्मने हुसैन किस तौक़े लानत का मुस्तहिक़ है।

हदीस शरीफ़: (तर्जमा) सय्येदना हज़रत अबु हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैंने हुजूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम से सुना कि मेरी उम्मत की हलाकत कुरैश के लौण्डों के हाथों होगी। हज़रते उमर बिन यहया ने फ़रमाया अल्लाह तआला की उन पर लानत हो, मरवान! तो लौण्डा है, तो सय्येदना अबु हुरैरा ने फ़रमाया कि अगर तुम चाहो तो मैं बता दूँ कि फ़लाँ का बेटा फ़लाँ, फ़लाँ का बेटा फ़लाँ है, तो मैं जा रहा था एक दिन अपने

दादा के साथ बनी मरवान की तरफ़ जबकि वोह मुल्के शाम के हुक्मरान हुए, पस जब दादा जान ने देखा इन बनी मरवान के नौ उम्र लौण्डों को तो उन्होंने फ़रमाया कि यह लौण्डे उन्हीं में से हैं (जिन से उम्मत हलाक होगी) हम ने अर्ज किया आप ज़्यादा जानने वाले हैं। (बुख़ारी शरीफ़)

रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मेरी उम्मत की हलाकत **कुरैश के लौण्डों** के हाथों होगी, लिहाज़ा यह जानकारी हासिल कर लें कि वोह लौण्डें कौन हैं, इस सिलसिले में आप मुहद्दिसीने किराम की आराऐ आलिया मुलाहेज़ा फरमायें। सबसे पहले तो **बुखारी** शरीफ़ में इसी मज़कूरा हदीस शरीफ़ का हाशिया नम्बर 3 मुलाहेज़ा फरमायें।

हाशिया नम्बर 3:(तर्जमा) इन लड़कों में पहला तो यज़ीद है और यज़ीद अक्सर बुजुर्गों को शहरों की अमारात से उतारता था और अपने कम उम्र रिश्तेदारों को मुक़र्रर करता था। (बुखारी शरीफ़)

हदीस शरीफ़:(तर्जमा) बेशक सय्येदना हज़रते अबु हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु जब बाज़ार तशरीफ़ ले जाते तो यह दुआ पढ़ते थे "ऐ मेरे अल्लाह मुझे सन 60 हिजरी का ज़माना देखने को न मिले और मुझे लौण्डों की हुकूमत न दिखा।" (फतहुल्बारी)

हदीस शरीफ़:(तर्जमा) सय्येदना हज़रते अबु हुरैरा रजियल्लाहो अन्हु ने फैज़ाने महब्बत से जान लिया था कि वोह जो कुछ यज़ीदे पलीद के बारे में रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमा दिया था लिहाज़ा हज़रते अबु हुरैरा दुआ माँगते थे कि "ऐ अल्लाह तआला मैं तेरी पनाह चाहता हूँ सन60 हिजरी की शुरुआत से और लौण्डों की हुकूमत से, तो हज़रते अबु हुरैरा की दुआ कबूल हुई और उनका 49 हिजरी में विसाल हुआ। सय्येदना हज़रते अमीरे मुआवया रज़ियल्लाहु अन्हु का विसाल और यज़ीदे पलीद की हुकूमत 60 हिजरी में हुई। (सवाइके मुहरेक़ा)

हदीस शरीफ़:(तर्जमा) प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

ने इरशाद फ़रमाया अल्लाह की पनाह **माँगो 70** हिजरी की शुरुआत से और लौण्डों की हुकूमत से। **(मिशकात शरीफ़)**

अब इसकी भी शरह मुलाहेज़ा फरमाऐं कि **सय्येदना** हज़रते मुल्ला अली क़ारी हनफ़ी रज़ियल्लाहु अन्हु ने **फ़रमाया** :

(तर्जमा) यानि जाहिल लौण्डों की हुकूमत **मुराद है जैसे** हज़रते अमीरे मुआवया रज़ियल्लाहु अन्हु का **लौण्डा यज़ीद** और हकम बिन मरवान की औलाद और इन जैसे।

हदीस शरीफ़:(तर्जमा) प्यारे नबी सल्लल्लाहु **अलैहि वसल्लम** इरशाद फरमाते हैं कि मेरी उम्मत का मुआमला **ठीक ठाक चल** रहा होगा यहाँ तक कि पहला शख्स जो इसमें रखना अन्दाज़ होगा **वोह** बनी उमय्या का एक शख़्स यज़ीद होगा। **(सवाइके मुहरेक़ा)**

हदीस शरीफ़:(तर्जमा) सय्येदना हज़रते **अबु दरदा** रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है उन्होंने फ़रमाया **कि मैंने प्यारे** नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना **वोह फ़रमाते हैं** कि पहले जो मेरी सुन्नत को बदलेगा बनी **उमय्या का एक** शख्स है जिसको यज़ीद कहा जायहगा। **(सवाइके मोहरेक़ा)**

हदीस शरीफ़:(तर्जमा) सय्येदना हज़रते सईद खुज़री **रज़ियल्लाहु** अन्हु से मरवी है कि मैंने प्यारे नबी सल्लल्लाहु **अलैहि वसल्लम** से सुना वोह फ़रमाते हैं कि 60 हिजरी के बाद से ऐसे ख़ल्फ़ होंगे जो नमाज़ों को ज़ाय करेंगे और ख़्वाहिशाते नफ़सानी के पाबन्द होंगे। (हुज्जतुल्लाह अलल्आलमीन)

हदीस शरीफ़:(तर्जमा) खुदा की क़सम हम ने उस वक़्त तक यज़ीद की बैअत नहीं तोड़ी जब तक हमें आसमान से पत्थर की बारिश का खौफ़ नहीं हो गया। क्यूंकि यज़ीद ऐसा आदमी था कि उम्महातुल औलाद से बेटियों से और बहनों से निकाह करता था और शराब पीता था और नमाज़ का तारिक था। (सवाइके मोहरेक़ा)

हदीस शरीफ़:(तर्जमा) हज़रते नोफ़िल इब्ने अबुल फ़ुरात ने

कहा कि मैं हज़रते उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु अन्हु की बारगाह में हाज़िर था तो एक शख़्स ने यज़ीद का ज़िक्र किया तो "अमीरुल मोमिनीन यज़ीद बिन मुआविया" कहा तो हज़रते उमर इब्ने अब्दुल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि तू यज़ीद को अमीरूल मोमिनीन कहता है? और हज़रते उमर बिन अब्दुल अज़ीज ने हुक्म दिया तो यज़ीद को अमीरूल मोमिनीन कहने वाले को 20 कोड़े मारे गये। (सवाइके मुहरेका)

हदीस शरीफ़: (तर्जमा) सय्येदतना हज़रते आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि अल्लाह तआला यज़ीद मतऊन व मरदूद को बरकत न दे क्यूंकि उसने मेरे प्यारे चहीते बेटे हुसैन के साथ बग़ावत की और उन्हें शहीद कर दिया और मेरे पास लाई गई क़त्ले हुसैन की मिट्टी और मुझे दिखाया गया उनके क़ातिल को और वोह क़ौम भी दिखाई गई जिसके सामने वोह शहीद किये जायेंगे और वोह क़ौम हुसैन की मदद न करेगी और इस वजह से इस क़ौम पर अज़ाब मुसल्लत होगा। (मासबता बिस्सुन्ना)

सय्येदना हज़रते इमामे अहमद बिन हम्बल रज़ियल्लाहु अन्हु का फतनवा भी मुलाहिज़ा फ़रमाइये :

(तर्जमा) हज़रते इमामे अहमद ने यज़ीद को काफ़िर कहा है। (सवाइके मुहरेका)

दर्से निज़ामी की एक ऐसी किताब का हवाला मुलाहिज़ा फरमायें जिसके पढ़े बग़ैर आलिम की डिगरी नहीं मिलती।

(तर्जमा) हक़ यह है कि यजीद का कतले हुसैन से राज़ी होना और इस पर खुश होना और अहले बैते नबवी की तौहीन करना लगातार साबित है। अगरचे इसकी तफ़्सीलात आहात हैं। पस हम तवक्कुफ़ नहीं करते उसके मामले में बल्कि उसके ईमान में। (क्यूंकि यक़ीनी काफ़िर है) उस पर अल्लाह की लानत हो और उसके हिमायतियों और मददगारों

All INDIA MISSION MOJADDID MORADABAD
All India MISSIONMOJADDID MORADABAD

पर। (शरह अक़ाइद नसफ़ी)

क्या ही अच्छा हो कि यज़ीदे पलीद के बेटे का ब्यान भी यज़ीदे पलीद के बारे में पढ़ लिया जाये।

(तर्जमा) फिर हुकूमत मेरे बाप को सौंप दी गई और वोह इसके लायक़ नहीं था, उसने शहज़ादी ए रसूल के शहज़ादे से झगड़ा किया, उसकी उम्र घटा दी गई और उसकी जानशीनी कट गई और वोह अपनी क़ब्र में अपने गुनाहों के वबाल में गिरफ़्तार है। फिर यज़ीद का बेटा रोया और कहा कि हम पर सबसे ज़्यादा सख़्त उसकी बुरी मौत और बुरा ठिकाना है। उसने आले रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क़त्ल किया है, शराब को ह़लाल कर दिया और काबा शरीफ़ को बर्बाद किया। (सवाइक़ मोहरेक़ा)

यज़ीद की गंदगियों को पढ़ने के लिए सय्येदना हज़रते शेख़ अबदुल हक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की किताब "जज़्बुल कुलूब इला दयारिलमहबूब" का यह हवाला मुलाहिज़ा फ़रमायें।

यज़ीद बिन मुआविया ने मुस्लिम बिन उक़्बा को एक बड़ा लश्कर शामियों का देकर अहले मदीना से लड़ने के लिए भेजा ताकि उन लोगों को मदीना शरीफ़ के हिर्रा में निहायत सख़्ती से क़त्ल करे और जितनी सख़्ती कर सकता हो करे। तीन रोज़ तक हतके हुरमत नबवी करके दादे बेदीनी दी, इसी सबब से इसको वाकेअए हिर्रा कहते हैं और इस वाकेआ का वुकू मक़ामे हिर्रा में हुआ जो कि मस्जिदे नबवी से एक किलो मीटर के फ़ासले पर है। यहाँ पर 1 हज़ार सात सौ बकाया मुहाजिरीन व अन्सार और उलमाऐ दीन को शहीद किया और ॰ ामुन्नास के अलावा 2000 औरतों और बच्चों के दो हज़ार आदमियों को मार डाला और सात सौ हुफ़्फ़ाज़े किराम और सत्तानवे क़ौम कुरैश को तलवार से ज़िब्ह कर डाला। फ़िस्क़ व फ़साद और ज़िना को मुबाह़ कर दिया। इस दरजे पर कि ब्यान करते हैं कि एक हज़ार

औरतों ने इस वाक़ए के बाद औलादे ज़िना जनी थी और घोड़ों को पैग़म्बर इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मस्जिद शरीफ़ में जोलानी देते थे और ग़ज़ब की बात सुनियह कि रोज़ा शरीफ़ व मिम्बर शरीफ़ की दरमियानी जगह में जिसकी बाबत सही ह़दीस शरीफ में आया है कि "यह बाग है जन्नत के बाग़ों में से" यहाँ पर उनके घोड़े लीद और पेशाब करते थे और तमाम लोगों को यज़ीदे पलीद की बैअत पर और उसकी गुलामी के अहद पर इस तरह आमादा करना चाहता था कि अगर चाहे तो बेच डाले चाहे तो आज़ाद कर दे। ख्वाह अल्लाह तआला की ताअत की जानिब बुलायह या गुनाह पर जबर व इकराह करे। ज़ब यज़ीदे पलीद के नज़दीक अब्दुल्ला इब्ने ज़मआ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने मुवाफ़िके हुक्मे कुरआन व ह़दीस के बैअत का ज़िक्र किया तो फ़ौरन उनकी गरदन मार दी गई। (राहतुल कुलूब)

अगर इसी तरह यज़ीदे पलीद की स्टोरी लिखी जाये तो एक दफ़्तर उसकी पलीदी से भर जायेगा।

यज़ीदे और यज़ीदियत को तलाक़े मुग़ल्लज़ा या यज़ीद की बैअत और जूतियाँ

इस सुर्ख़ी के ज़ेल में हम सिर्फ़ एक इबारत मज़कूरा किताब की पेश करते हैं।

(तर्जमा) अहले मदीना बाद ज़ाहिर हो जाने यज़ीद की अलामाते फ़िस्क़ व फ़साद के मिम्बर पर चढ़कर इसकी बैअत से इन्कारी हो गये। अब्दुल्ला बिन अमर इब्ने ह़फ्स मख़ज़ूमी ने अपना अमामा सर से उतार कर कहा कि अगरचे यज़ीद ने मुझको सिला और इन्आम दिया और मेरी जायदाद में इज़ाफ़ा किया लेकिन जो दुश्मन है खुदा का और दाइमुलख़म्र है इसलिए उसकी बैअत को मैंने अपने से अलैहदा कर दिया। जैसा कि

अपनी दस्तार को, दूसरा उठा और अपनी जूतियाँ पांव से उतार कर इसी तरह यज़ीद की बैअत तोड़ दी यहाँ तक कि मजलिस अमामों और जूतियों से भर गई। (राहतुल कुलूब)

इन तमाम हक़ाइक़ को पढ़लेने और जान लेने के बाद सय्येदना हुजूर शहीदे आज़म इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से महब्बत और यज़ीदे पलीद से नफ़रत पैदा होना एक यकीनी बात है और ईमान का समरा व नतीजा है। चुनांचे तमाम ही बुर्जुगाने दीन इमामे हुसैन की महब्बत व हिमायत से मुरस्सा नज़र आते हैं और यज़ीदे पलीद से मुतानफ्फिर और बेज़ार दिखई देते हैं। सय्येदना सुल्तानुल हिन्द ग़रीब नवाज़ मुईनुद्दीन अजमेरी रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमायाः

शाह हस्त हुसैन बादशाह हस्त हुसैन
दीन अस्त हुसैन दीं पनाह हस्त हुसैन
सर दाद न दाद दस्त दर दस्ते यज़ीद
हक़्क़ा कि बिनाये ला इलाह हस्त हुसैन

दीन हैं आप ओर दीं पनाह आप हैं बादशाह या शहे करबला आप हैं
सर दिया और फ़ासिक की बैअत न की नाशिरे कलमा ए तय्यहबा आप हैं

इसी हुसैनी महब्बत ने ताज़िया शरीफ़ को वुजूद बख़शा है जिसकी शरई हैसियत पर आप से कुछ अर्ज़ करना है मगर इसको अच्छी तरह ज़हन में रखें कि सय्येदना हज़रते नूह अलैहिस्सलाम का बेटा कनआन काफ़िर था मगर बाप नबी। बेटे की वजह से बाप को मतऊन करना यह भी यज़ीदी काम है। किसी भी सहाबी की अज़मत को निशाना बनाना यह भी यज़ीदी मिशन है।

हदीस शरीफ़ में यज़ीदे पलीद के खिलाफ़ नामज़द रिर्पोट है और यह बदबख़्त सहाबी भी नहीं है, लिहाज़ा इसको नामज़द करके बुरा कहना ममदूद व महबूब है। मगर किसी सहाबी पर तारीख़ के कितने भी इलज़ामात हों उनकी कोई हैसियत नहीं

है क्यूंकि ह़दीस शरीफ़ के मुक़ाबले में तारीख़ को रद्द कर दिया जायेगा। आयाते करीमा और अह़ादीसे करीमा में हज़राते सेहाबा ए केराम के बेशुमार फज़ाइल व मनाक़िब मौजूद हैं वोह तमाम तारीखें मुसतरद होंगी जिन में ह़ज़राते सहाबा ए किराम की अज़मत पर चोट पड़ती हो। तमाम बातिल फिरक़े हज़राते सहाबा ए कराम के ख़िलाफ़ तारीख़ी हवाले लिए फिरते हैं और अह़ादीसे करीमा को नज़र अन्दाज़ करते हैं।

ताज़िया शरीफ़ की शरई हैसियत

ताज़िया शरीफ़ की तारीखी हैसियत क्याहै? सौ साल पहले से बना हो या हज़ार से पहले से, देखना यह है कि इसकी शरई हैसियत क्या है? तो इस सिलसिले में हम कुरआन शरीफ़ की तरफ़ रूजू करते हैं कि जो चीज़ें अल्लाह वालों से निस्बत हासिल कर लेती हैं उनका क्या मक़ाम हो जाता है। इसको समझने केलिए पढ़िये इरशादे रब्बे क़दीर :

(तर्जमा) बेशक सफ़ा और मरवा अल्लाह की निशानियों में से हैं। (बसीरतुल ईमान सफ्हा 28 पारा 2)

इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने सफ़ा और मरवा दो पहाड़ियों को अपनी निशानी क़रार दिया है। इसलिए कि एक वलिय्या के कदमों से इन्हें निस्बत हो गई है। सालेहीन से जिस चीज़ को निस्बत हो जाये वोह अज़मत वाली हो जाती है और अल्लाह तआला की निशानी हो जाती है। अज़मत और निस्बत वाली चीज़ की ताज़ीम व तौक़ीर दीन में शामिल है और अल्लाह तआला की निशानियाँ जो अल्लाह तआला की याद दिलाती हैं अल्लाह वालों की याद दिलाती हैं, वोह हर एक का मुकद्दर नहीं। इरशादे रब्बे क़दीर है :

(तर्जमा) यह बात है और जो ताज़ीम करे अल्लाह को याद दिलाने वाली चीज़ों की तो यह बेशक दिलों के तकवे से

है। (बसीरतुल ईमान सफ्हा 802)

अब इस आयते करीमा की तफ़्सीर भी मुलाहेज़ा फरमायहं।

शआइरूल्ला यानि अल्लाह तआला की निशानियों की ताज़ीम। जिसका दिल ख़ौफ़े इलाही से भरा होगा वोह उससे मन्सूब चीज़ों का अदब ज़रुर करेगा। अदब करना शिर्क नहीं बलिकि ऐन तौहीद के आसार में से है। अल्लाह तआला का हर आशिक़ हर उस चीज़ की क़द्र करता है जो अल्लाह तआला की तरफ़ मन्सूब हो जाती है। इबादाते ज़ाहिरी तो जिस्म का तक्वा है और दिल में बुर्जुगों और उनके तबर्रूकात की ताज़ीम होना यह दिल का तक्वा है। जिस पत्थर या जानवर को अज़मत वाले से निस्बत हो जाये वोह अल्लाह तआला की निशानी बन जाता है। कुरआने करीम में हदी के जानवर को काबतुल्लाह की निस्बत से और सफ़ा व मरवा की पहाड़ियों को काबे वाली हज़रते हाजरा की निस्बत से शआइरूल्लाह फ़रमाया। हज़राते औलिया ए कराम के मज़ाराते मुक़द्देसा भी शआइरूल्लाह यानि अल्लाह तआला की निशानियाँ हैं। (तफ्सीर रूहुलबयान शरीफ़) और जिन लोगों को अल्लाह तआला के प्यारों से निस्बत हो जाये वोह सब शआइरूल्लाह हैं, जैसे हज़राते सादात किराम।

(तफ्सीर क़दीरी बदीई मय फ़वाइदे रशीदया सफ्हा 803)

अगर गोर से देखा जाये तो हजरे असवद को चूमना भी इसी निस्बत की वजह से है कि प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस पत्थर को चूमकर क़यामत तक के लिए बूसागाह बना दिया। चुनांचे सय्येदना हज़रते उमर फ़ारुके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु जब संगे असवद के क़रीब चूमने के लिए आये तो आप ने फ़रमाया :

हदीस शरीफ़:(तर्जमा) हज़रते आबिस इब्ने रबीआ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैंने हज़रते उमर फ़ारुके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा कि वोह हजरे असवद

को चूम रहे हैं और फ़रमा रहे हैं कि ऐ हजरे असवद! बेशक तू एक पत्थर है, न तो नफ़ा देता है और न नुकसान और मैं तुझे न चूमता अगर मैंने रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को चूमते न देखा होता। **(बुखारी शरीफ़)**

यह बात भी नज़र में रहे कि हजरे असवद **तो चूमा** ही जाता है क्यूंकि उसे बराहे रास्त निस्बते रसूल हासिल है मगर निस्बत का यह अन्दाज़ भी खूब और बहुत खूब है कि अगर वहाँ तक आपका मुँह न जाये तो लकड़ी या खपच्ची हजरे असवद को लगाकर उस लकड़ी और खपच्ची को चूम लो और अगर आपकी लकड़ी और खपच्ची भी वहाँ तक न पहुँचे या कोई लकड़ी और खपच्ची भी हाथ में नहीं है तो हजरे असवद की तरफ़ अपना मुँह करके अपना हाथ चूम लो। निस्बती होने के लिए यह ज़रुरी नहीं कि जिससे निस्बत दी जा रही है उससे बराहे रास्त बिलावास्ता टच हो। चुनांचे हवाले की दुनिया में आइये और इस हकीकत को पढ़िये।

(हवाला) और हाथ न पहुँचे तो लकड़ी से संगे असवद को छू कर उसे चूम लो यह भी न बन पड़े तो हाथों से उसकी तरफ़ इशारा करे और बूसा दे। मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुँह रखने की जगह पर निगाहें पड़ रही हैं यही क्या कम है।(फतावा रिज़विया जिल्द 4 सफहा 701)

निस्बत बराहे रास्त हो या दूर से तब भी निस्बत निस्बत ही है और निस्बत का भरपूर फैज़ान मिलेगा। ताज़िया शरीफ़ को भी हुजूर इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से निस्बत हासिल है और यह तो बना ही उनके नाम पर है जबकि लकड़ी व छड़ी संगे असवद को छूने या चूमने के लिए न बनी थी उसे तो वक़्ती तौर पर इस्तेमाल कर लिया गया।

ताज़िया शरीफ़ जो आम तौर पर बनाया जाता है वोह न तो रोज़ाऐ हुसैनी की शबीह होती है और न किसी दूसरे बुर्जुग के

आस्ताने की, बल्कि वोह तो यूँही जिसकी समझ में जो आया बना लिया। क्यूंकि ताज़िया शरीफ़ का मक़सद तशहीरे हुसैनी है कि पूरी दुनया में शहादते हुसैन का चर्चा हो और ईमान वालों में ईसार व कुर्बानी और शहादत का जज़्बा पैदा हो। यह यज़ीदियों को एक आँख बर्दाशत नहीं है।

आप इस अन्दाज़े तशहीर को अपने समाज में देखें कि किस तरह रचा बसा हुआ है, जिसके यहाँ शादी ब्याह का प्रोग्राम होता है वोह अपना मकान अपनी गली अपना मोहल्ला सजाता है, गेट लगाता है ताकि हर गुज़रने वाले को पता चले कि इसके चहीते या चहीती की शादी है और इस सजावट व रोशनी और गेटसाज़ी और मण्डप को दुनिया का कोई मौलवी न तो नाजाइज़ कहता है और न मना करता है चूंकि निकाह़ के प्रोग्रामों में से एक प्रोग्राम यह भी है कि निकाह़ की तशहीर की जाये, कुल्या में गुड़ न फोड़ा जाये कि कल कोई सवालिया निशान न क़ायम कर दे, मालूमात न होने की बिना पर। इसलिए प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमर ने इरशाद फ़रमाया कि निकाह़ का एलान दफ़ बजाकर करो।

जब अपने नूरे नज़र की तशहीर केलिए यह सब कुछ हो सकता है तो नबी के चहीते नवासों की तशहीर केलिए यह तमाम काम कैसे नजाइज़ हो सकते हैं?। तशहीरे हुसैनी में तो कौम को वाकेआए करबला ईसार व वफ़ा और यज़ीदे पलीद के जोरो जफ़ा के साथ साथ मिल्लते मुसलिमा को एक नया हौसला और पुख़्ता अज़्म ज़ौके जिहाद शौके शहादत का सबक़ भी मिलता है और कुदरती तौर पर मुस्लमानों के ईमानी जज़्बात उभरते हैं। दुनया भर की महाफ़िले मीलाद शरीफ़, जलसों, उर्सो व इज्तेमाआत में सजावट का कितना ज़बरदस्त इन्तेज़ाम व ऐहतेमाम होता है और कहीं कहीं तो एक एक किलो मीटर के फासले पर गेट बनाये जाते हैं, ज़बरदस्त सजावट और मण्डप होता है और

All India MISSION MOJADDID MORADABADI

स्टेज को तो इतना संवारा और सजाया जाता है कि लोग इसको देखने के लिए उमड़ पड़ते हैं। जलसे की तशहीर व अहमियत के लिए पोस्टर भी बहुत खूबसूरत पंचरंगा और साइज़ भी तूफानी होता है ताकि पोस्टर को देख कर ही लोग समझ जायें कि पोस्टर के हिसाब का ही जलसा भी होगा। जबकि जलसे की इत्तला तो एक छोटा सा एक रंग का हैंडबिल भी दे सकता है। इस पर न तो फुजूल खर्ची का शोर होता है और न इस्राफ़ का वावेला और न कोई यह पूछता है कि इस की इब्तेदा किसने की और यह तमाम तामझाम कुरआने करीम की किस आयते करीमा और किन किन अहादीसे करीमा में लिखी हुई हैं। यह तमाम आराईश व ज़ेबाइश और सजावट व रौनक़, यह झालर व झंडियाँ चूंकि सब अपने लिए हैं, इस मण्डप में आकर मौलवी साहेबान सजेंगे तो सब कुछ दुरुस्त है इसमें किसी शरई क़बाहत का कोई तज़किरा नहीं "जो हो रहा है होने दो" जितनी भी टीप टाप है, है तो सब हमारे लिए!

हाय अफसोस खुद को मुस्लमान कहने वाले बल्कि इस्लाम का ठेकेदार कहलाने वाले खुद अपनी तशहीर के लिए तो सब कुछ कबूल करते हैं मगर वोही सामाने तशहीर नबीऐ करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस मज़लूम शहज़ादे केलिए बर्दाशत नहीं कर पा रहे हैं। बल्कि जड़ से ही हुज़ूर इमामे आली मकाम शहीदे आज़म हज़रते इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का नाम व निशान खत्म करने के मूड में हैं। यह अलग बात है कि यज़ीदयों का अब्बा यज़ीदे पलीद सब कुछ हाथ पांव मारने के बाद भी नाकाम व नामुराद ही दुनिया से गया और लानत का तौक़ इस पर अलग से पड़ा।

है रूसवाये ज़माना वोह यज़ीदे नाबकार अब तक
मकीने क़लबे मोमिन हैं हुसैने बावक़ार अब तक

हुसैनी उश्शाक़ व खुद्दाम ने उस वक़्त भी यज़ीदियत को धूल चटाई

है और इस वक़्त भी यज़ीदियों को छठी का दूध याद दिला देंगे और यज़ीदियों का कोई ख़्वाब शर्मिन्दा ऐ ताबीर न हो सकेगा।

ताज़िया शरीफ़ की ताज़ीम करना इस्तेदलाली तौर पर कुरआने करीम से साबित है, जो चीज़ अल्लाह वालों से निस्बत हासिल कर लेती है वोह क़ाबिले ताज़ीम हो जाती है, और उसकी तअज़ीम भी वोही करता है जिसके दिल में रब का ख़ौफ़ हो। निस्बत वाली चीज़ का एहतेराम करना हर ठर्रे और खुर्रे का काम नहीं है।

यज़ीदी कैम्प की तरफ़ से यह भी कहा जाता है कि ताज़िया शरीफ़ के सामने फातेहा नहीं देनी चाहिए कि लोग पता नहीं क्या समझेंगे, मगर यह यज़ीदी लोग खतरे का यह सिग्नल कहाँ कहाँ दिखाऐंगे। ताज़िया शरीफ़ के सामने अगर नियाज़ व फातेहा देना इसलिए जाइज़ नहीं है कि लोग क्या समझेंगे तो फिर मज़ाराते औलिया ए कराम पर भी नियाज़ व फातेहा बंद कर देना चाहिए कि पता नहीं लोग क्या समझेंगे कि साहिबे क़ब्र की फातेहा हो रही है या सीधे क़ब्र की पूजा हो रही है। और अगर यह जज़्बा ए मन्हूस और जवान हो जाये तो फिर यूँ भी कहियेगा कि गुम्बदे खिज़रा की छांव तले खड़े होकर हाथ बांध कर सलाम भी न पढ़ा जाये कि पता नहीं लोग क्या समझेंगे कि जालियों और मिट्टी के ढेर को सलाम कर रहे हैं, इस खतरे को एक यज़ीदी कैम्प ने तो महसूस भी कर लिया है और इस पर इनका सख़्त पहरा भी है कि किसी को रुक कर हाथ बांधकर सलाम नहीं पढ़ने देते हैं। यह काला और अंधा कानून तो अभी आपके घर में दम तोड़ देगा और यज़ीदी मिशन का तड़पता लाशा बीच चौराहे पर होगा।

नमाज़े जनाज़ा को ही लेलीजिये कि घर के मुर्दे को नहला धुला कर सफ़ेद कपड़े पहना कर मैदान में रख दिया और सब के सब हाथ बांधकर जनाज़ा सामने रख कर खड़े हो गये और आहिस्ता आहिस्ता खोपड़ी भी हिलाने लगे, अगर कोई यह समझने लगे कि मुसलमान मरते ही खुदा हो जाता है और सारी क़ौम उसकी

पूजा पाट में लग जाती है तो क्या नमाज़े जनाज़ा इसलिए छोड़ दी जायेगी कि लोग क्या समझेंगे? उश्शाक़े हुसैनी का हर मौक़े पर एक ही जवाब होगा कि यह औनी पौनी समझ वाले जायें अपनी ऐसी तैसी में। हम क़ब्र की फ़ातेहा नहीं पढ़ते हैं हम जनाज़े की पूजा पाट नहीं करते बल्कि अल्लाह तआला की इबादत करके मुसलमान मय्यत के लिए मग़फरत की दुआ करते हैं। इसीतरह ताज़िये के सामने ताज़िये की नहीं बल्कि नबी के नवासों की फ़ातेहा करते हैं। जिन्होंने ने :

खून से अपने जला के रहे मौला में चराग़
रास्ता उम्मत नाना को दिखाते हैं हुसैन

"लोग पता नहीं क्या समझेंगे" नेक कामों को बंद कराने केलिए यह अग्रेंज़ी फार्मूला बराहे सऊदिया नजदिया भारत के यज़ीदी कैम्पों में आया है।

यज़ीदी कैम्प की तरफ़ से ताज़िया शरीफ के दफ़्न करने पर भी आवारा लबो लहजे में हूहा मचाई जाती है कि फ़र्ज़ी करबलाऐं बना रखी हैं और वहाँ ताज़िया दफ़्न किया जाता है और यह एक गौरख धंधा है और इस्लाम में इसकी कोई गुंजाइश नहीं है,।

यहाँ भी अगर यह कि दिया जाता तो कुछ बात बन जाती कि यहूदी इस्लाम में इसकी कोई गुंजाइश नहीं क्यूंकि मोहम्मदी इस्लाम में इसकी गुंजाइश ही नहीं बल्कि इसकी बाकायदा तालीम व तबलीग़ है।

कुरआने करीम के सफ़हात अगर बोसीदा हो जायें या दीनी किताबें अगर खस्ता हो जायें तो उनके लिए इस्लामी क़ानून यह है कि उन्हें या तो दफ़्न कर दिया जाता है या फिर उन्हें इस तौर पर पानी में ठण्डा कर दिया जाये कि वोह पानी के अन्दर बैठ जायें जिससे बेअदबी न हो। क्यूंकि कुरआने करीम के इन कागज़ी सफ़्हात को अल्लाह के कलाम से निस्बत है लिहाज़ा इनकी बेहुरमती न होने पाये। ऐसे उपाय किये जायें कि इनकी क़द्र बाक़ी रहे। लिहाज़ा इन्हें दफ़्न करने या पानी

में ठण्डा करने का तरीक़ा इस्लाम ने दिया।

अब ताज़िया शरीफ़ का 10 मुहर्रम शरीफ़ के बाद किया क्या जाये तो इसके दो ही तरीक़े हैं, एक तो यह कि इसको इमामबाड़े शरीफ़ में रख दिया जाये या फिर मस्जिदों व मदरसों वग़ैरा में बहिफाज़त मचान पर रख दिया जाये। दूसरा तरीक़ा यह है कि इसको दफ़्न कर दिया जाये या पानी में ठंडा कर दिया जाये ताकि ताज़िया शरीफ़ और इसके अज्ज़ा बेहुरमती से महफ़ूज़ हो जायें। तो ताज़िया शरीफ़ को दफ़्न करना या पानी में ठंडा करना अज़रोऐ शरीअत दुरुस्त है। यह भी ताज़ीम ही का एक तरीक़ा है।

गुज़िश्ता साल बरेली के एक गांव में इस बात पर ले दे मच गई, यज़ीदियों का कहना था कि जिस मस्जिद में ताज़िया रखा हुआ है उस मस्जिद में नमाज़ जायज़ नहीं और पढ़ी जायेंगी तो नमाज़ नहीं होगी। यज़ीदी मौलवी अपने चन्द यज़ीदियों के साथ इस मौकफ़ पर डटे तो पूरा गांव इस बात पर जम गया कि ताज़िया शरीफ मस्जिद ही में हस्बे साबिक़ रखा रहेगा। और हस्बे साबिक़ ताज़िये के मस्जिद में होते हुए नमज़ भी होती रहेगी। जब हुसैनियों और यज़ीदियों में ठन गई और ,नौबत, बजने वाली ही थी कि फ़रीक़ैन में तय हुआ कि मरकज़े अहले सुन्नत जामेआ क़दीरिया मुरादाबाद शरीफ़ से मसअला मालूम कर लिया जाये, क़दीरी दारुल इफ़्ता जो फैसला देगा वोह हम सबको मन्जूर होगा। लिहाज़ा फ़ोन आया, फ़ोन करने वाला यज़ीदी था जो कि उसके सवाल के तेवर बता रहे थे। मज़कूरा मसअला मुझसे मालूम किया गया, मैंने फ़ोन पर ही मसअला बता दिया कि जिस मस्जिद में ताज़िया शरीफ़ होगा उस मस्जिद में नमाज़ दुरुस्त है और वोह मस्जिद सुन्नियों और हुसैनियों की ही होगी। ताज़िये की मौजूदगी इस बात की अलामत होगी कि इस मस्जिद का यज़ीदी कैम्पों से कोई तअल्लुक़ नहीं है, तो फ़ोन करने वाले

ने इन्तेहाई मायूस लहजे में कहा "अब तो ताज़िया मस्जिद में ही रहेगा" और फ़ोन रख दिया।

जब मस्जिदों में ईद मिलादुन्नबी और उर्सों के दूसरे बोर्ड हिफ़ाज़त के लिए रखे जा सकते हैं तो फिर ताज़िया शरीफ़ क्यों नहीं रखा जा सकता? यज़ीदियों की क़ब्रों के तुग़रे जब मस्जिदों में लटकाये जा सकते हैं तो नबी के शहज़ादों के सामाने तशहीर (ताज़िया) को हिफाज़त के लिए मस्जिदों में क्यों नहीं रखा जा सकता और इसकी मौजूदगी में नमाज़ न होने का क्या सवाल पैदा होता है?।

हर हुसैनी मुस्लमान सोचे कि हर घर में मीलाद शरीफ़ होता है, हर मौहल्ले और हर शहर में दीनी जलसे होते हैं इनमें घर की दरयाँ और चाँदनियाँ बिछाई जाती हैं। घर की चौकियाँ और तख़्त बिछाये जाते हैं या फिर किराये का सामान मंगाया जाता है और यह किराये का सामान इस दीनी जलसे से पहले भी दूसरे स्वांग, सरकस, रण्डी के नाच, कथा कीर्तन में इस्तेमाल होता है और आज के बाद भी इन मज़कूरा कामों में इस्तेमाल होगा और यही हाल लाईट और सजावट के सामान का है कि वोह भी कल कहाँ कहाँ इस्तेमाल हुआ है और फिर कल को कहाँ कहाँ इस्तेमाल होगा। मगर इन सबको महफ़िले रसूल, बज़्मे रसूल, मिम्बरे रसूल का नाम दे दिया गया। अब मौलाना साहब बार-बार यही कहेंगे कि यह बज़्मे रसूल है, यह मिम्बरे रसूल है, कोई मुसलमान नम्गे सर या कोई दाढी मुंडा इस पर अज़रूऐ शरीअत नहीं बैठ सकता कि यह मिम्बर रसूल है। चन्द घण्टों के इस सामान को मेहफ़िले ज़िक्रे रसूल में लगाया गया तो आदाब की बरसात देखी जा रही है। इन दरी, चादरों, झालरों, झण्डियों, चौकियों और तख़्तों को ज़िकरे रसूल से थोड़ी देर के लिए निस्बत हो गई है, हो सकता है कि यह सारा का सारा सामान यहाँ से उखड़ कर किसी सवांग या कीर्तन या नाच गाने की सभा में चला जाये मगर वक़्ती

निस्बत ने इस सामान को अज़मतें दीं कि अब कोई इस मेहफिल में बीड़ी सिगरेट भी नहीं पी सकता कि बज़्मे रसूल है। मौहल्ले का कुत्ता जो दिन भर यहीं घूमता है अब अगर आ जाये तो बड़ी तेज़ी के साथ इसको भगाया जायेगा कि यह बज़्मे रसूल है कुत्ता कैसे आ गया? यह वक़्ती निस्बत की जलवागरी है कि घर की चादरों और चहार दीवारी की ताज़ीम की जा रही है। किराये पर आये हुए डेकोरेशन के सामान की ताज़ीम की जा रही है जो चन्द मिन्ट बराद टांय टांय फिश हो जायेगा, मगर ताज़िया शरीफ़ तो बनाया ही गया है हुसैनी प्रचार के लिए, इसका तो मक़सद ही तशहीरे हुसैनी है, वोह तो न पहले ही गन्दी जगहों पर इस्तेमाल हुआ है और न बाद में ही किसी गन्दी जगह इस्तेमाल होगा। तो इस हुसैनी निस्बत रखने वाले ताज़िये शरीफ़ की ताज़ीम बिला शुबा जाने ईमान है बल्कि इश्के हुसैनी की पहचान है, अज़ीम निस्बते हुसैनी रखने वाले ताज़िये शरीफ़ की वोही ताज़ीम करेगा जिसका दिल मुत्तक़ी होगा, और जिस का दिल यज़ीदी बला में गिरफ़्तार होगा उसकी अपनी यज़ीदी तकनीक होगी, यज़ीदी सोच होगी, वोह इसी पर नंगा नाच करेगा।

ताज़िया शरीफ़ ईमान वालों की नज़र में बहुत ही मोहतरम व मोअज़्ज़म है। ईमान वालों में भी दो जमाअतें हैं, एक अवाम, दूसरे ख़्वास। ताज़िया शरीफ़ हर दो जमाअतों में मोहतरम व मोअज़्ज़म है और दोनों जमाअतों ने ताज़िया शरीफ़ का इन्तेज़ाम व एहतेमाम भी किया है और ऐहतराम भी। ताज़िया शरीफ आज की कोई नई बात नहीं है सदयों साल पुरानी बात है।

भारत में, लगभग आठ सौ साल पहले से तज़िया शरीफ़ की रिवायत मिलती है।

पीरें तरीक़त हजरत अल्लामा सय्यद इख़्तियार आलम मियाँ जाफ़री मदारी सज्जादा नशीन मकनपुर शरीफ़ फ़रमाते हैं:

ताज़ियादारी की शुरुआत सय्येदना हुज़ूर मदारूल आलामीन

रज़ियल्लाहु अन्हु के बिरादरज़ादे फ़रज़न्दे मानवी ख़लीफ़ा व जानशीन कुतबुल अक़्ताब हज़रत ख़्वाजा सय्यद मोहम्मद अर्गून रज़ियल्लाहु अन्हु ने की थी, और आज भी ख़ानक़ाहे आलिया मदारिया मकनपुर शरीफ़ में यह मामूल जारी है। हर साल मोहर्रम की नवीं और दसवीं तारीख़ को ख़ानक़ाहे आलिया मदारिया मकनपुर शरीफ़ द्वारा दो ताज़िये तैयार किये जाते हैं, जिनका ख़र्च दरगाह शरीफ़ द्वारा वहन किया जाता है। ख़ानक़ाह शरीफ़ की आमदनी से ख़ानक़ाह शरीफ़ के ख़र्चों का वार्षिक बजट पारित किया जाता है इस में लाज़मी तौर पर 2 ताज़ियों और गश्त व रासते में लाइट वगैरा के ख़र्चे का 25 से 30 फ़ीसद ख़ानक़ाहे आलिया मदारिया मकनपुर शरीफ़ उठाती है।

आइये! अब भारत की एक और महान ज़ाते गिरामी का मामूल भी देखिये।

25 मोहरम शरीफ़ को सय्येदना हुज़ूर बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर रज़ियल्लाहु अन्हु के उर्से मुबारक के मौक़े पर हुज़ूर बाबा साहब का चिल्ला खाना खुलता है जिसमें सय्येदना सुल्तानुल हिन्द गरीब नवाज़ हुज़ूर ख़्वाजा मोईनुद्दीन अजमेरी रज़ियल्लाहु अन्हु का चांदी का ताज़िया शरीफ़ रखा हुआ है। ज़ाऐरीन इसकी ज़्यारत से फ़ैज़ियाब होते हैं। (दीने मौहम्मदी और ताज़िया दारी)

हिन्दुस्तान का मुस्लमान दो बुज़ुर्गों का एहसानमंद है (1)सय्येदना हुज़ूर मदारूल आलमीन सुल्तानुल औलिया सय्यद बदीउद्दीन ज़िंदा शाह मदार (2)सय्येदना हुज़ूर सुल्तानुल हिन्द गरीब नवाज़ खवाजा सय्यद मोईनद्दीन चिश्ती अजमेरी रज़ियल्लाहु अन्हुमा। और इन दोनों ख़ानक़ाहों में नसलन बादा नस्लिन क़रनन बादा क़रनिन ताज़िया शरीफ़ बनता चला आ रहा है और इसकी ताज़ीम व तौक़ीर ज़्यारत व सआदत का प्रचार तो सदियों से होता है।

गोया कि भारत वासियों को जहाँ से इस्लाम मिला है वहाँ से

ताज़िया शरीफ़ भी मिला है लिहाज़ा हुसैनी मस्ताने अपने इन बुज़ुर्गों की खानकाहों से मिलने वाले पैग़ाम को कुबूल करें और तशहीरे हुसैनी के लिए ताज़िया शरीफ़ बनाऐं और बराऐ ऐलान ढोल ताशा भी बजाऐं, शरबत की सबीलें भी लगाऐं और नियाज़ व फ़ातेहा भी दिलाऐं और महाफ़िले ज़िक्रे शहादत सजाऐं और रुहे हुसैन को खुश करने का जश्न मनाऐं और यज़ीदियों को खूब जलाऐं, और इतना जलाऐं कि वोह कबाब हो जाऐं।

यज़ीदी कैम्प पुरफ़रेब तरीक़े से यह ज़ेहन सड़ाता है कि वोह तो भूखे प्यासे शहीद हुए और हम खिचड़ा और शरबत खा पी कर मौज मस्ती मारें।

इस यज़ीदी इस्तेदलाल की तर्ज़ पर तो यह भी कहा जा सकता है कि प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो फ़क्र व फ़ाक़े की ज़िन्दगी बसर फ़रमाऐं और चटाई पर आराम फ़रमाऐं और यह यज़ीदियत के ठेकेदार मुर्ग पुलाव, चिकन तन्दूरी, उड़द की फरैरी दाल, ठण्डी खीर, ककड़ी और सरदा और सोडा वाटर, पेप्सी वग़ैरा उड़ाऐं और बाद मरने के भी इसकी फरमाईश करें!! ऐसे लोगों को शर्म आना चाहिए।

क्या यह यज़ीदियत के ठेकेदार लोग चिकन और चिकन पुलाव को मना करेंगे, और प्यारे रसूल ने ऊँट और दराज़ गोश की सवारी फ़रमाई है, यह यज़ीदियत के ठेकेदार न गधे पर सवार नज़र आते हैं और न यह यजीदी ऊँट पर सवार दिखाई पड़ते हैं। यह बेकार फ़ार्मूले वाले कारों में नज़र आते हैं, आज अगर कोई कहे कि हाय रसूल तो इतनी मामूली सवारी पर तशरीफ़ फ़रमा होते थे और आज के यज़ीदी ठेकेदार प्लेन और हैलीकॉप्टर में उड़ रहे हैं, ट्रेनों में कारों में भागे जा रहे हैं, तो क्या जवाब देंगे यह बोगस नारे लगाने वाले कि करबला में इमामे हुसैन और उनके साथी भूखे प्यासे रहे और हम खिचड़ा और शरबत खाऐं पियें। खिचड़ा और शरबत इस मुक़द्दस नज़रिये के साथ बनाया

और खाया पिया जाता है जिसको इस्लाम में ईसाले सवाब कहा जाता है और ईसाले सवाब बहरहाल कुरआने करीम और अहादीसे करीमा की मुक़द्दस तालीम है। तफ़सीलात केलिए देखिए फ़क़ीरे क़दीरी की कुतब (1) सुबूत ईसाले सवाब (2)इस्लाम में ईसाले सवाब।

एक चालाक यज़ीदी ने ताज़िया शरीफ़ का रिश्ता हज़रते अमीर तैमूर लंग बादशाह से जोड़कर और फिर उनको शिया बता कर ताज़िया शरीफ़ से अपनी भड़ास निकाली है।

अगर तज़िया शरीफ हजरत अमीर तैमूर लिंग से तअल्लुक रखता है तो यह कोई गलत नहीं है क्योंकि हजरत अमीर तैमूर लिंग एक शिया नहीं है।

आइये तहक़ीक़ की दुनिया में और इस बारे में एक तफ़्सीली फ़तवे को देंखें।

हज़रत अमीर तैमूर लंग कौन थे?

क्या फ़रमाते हैं शहज़ादा ए हुजूर मुजद्दिद मुरादाबादी हुजूर शेरे अहले सुन्नत किबला इस बारे में एक यजीदी ने लिखा है कि ताज़िया बनाना हराम है और इसे देखना भी हराम है। इस यज़ीदी ने न तो कुरान शरीफ़ का कोई हवाला दिया है और न ही उसने कोई हदीस सुनाई है।

उसने बकवास की है कि सब से पहला ताज़िया अमीर तैमूर लंग ने बनाया था और वह एक शिया था, लेकिन इस यजीदी ने कोई सबूत नहीं दिया कि तैमूर लंग शिया था। हमारे सामने आपकी किताब तज़िया शरीफ़ का शरई हुक्म है और उसमें आपने कुरआन शरीफ़, हदीस शरीफ़ और हनफ़ी किताबों के दलाइल से ताज़िया शरीफ़ के जायज़ होने पर जो दलीलें दी हैं उसने हसनियों के दिलों को ठंडा कर दिया है। बराये करम आप अमीर तैमूर लंग के बारे में भी बतायें कि वोह शिया था या सुन्नी थे।

आप इस बारे में मज़बूत और ठोस दलाइल व तफ़्सीलात से नवाज़ें।

फ़कत:——————————

मोहम्मद गुफ़रन क़दीरी, मोहम्मद नईम चिश्ती ब्रह्मपुरी दिल्ली

अलजवाब..

सय्येदना हज़रत सय्यद अमीरे कुलाल रदियल्लाहु अन्हु आठवीं सदी हिजरी के एक अज़ीम रूहानी पैशवा हैं। नक्शबन्दी सिलसिले के बानी सय्येदना हज़रत ख़्वाजा बहाउद्दीन नक़्शबंद रदियल्लाहु अन्हु के पीरो मुर्शिद हज़रत अमीर कुलाल रदियल्लाहु अन्हु ही हैं और हज़रत अमीर तैमूर लंग अलैहिर्रहमा हज़रत अमीरे कुलाल के चहीते मुरीद हैं, और उनको अपने पीरो मुर्शिद से बेपनाह महब्बत थी और पीरो मुर्शिद को भी उन से बेपनाह लगाओ था और यह रिश्ता अटूट बना रहा।

आज से लगभग छह सौ साल पहले, हज़रत अमीरे कुलाल के विसाल के पचास साल बाद, उनके पोते हज़रते अल्लामा सय्यद शहाबुद्दीन अलैहिर्रहमा ने "अगाहिये अमीरे कुलाल" नाम से एक किताब लिखी। उस किताब में यह मोजूद है कि अमीर तैमूर लंग कौन थे। यदि आप इस किताब के उर्दू तरजमे के कुछ अंशों को देखते हैं, तो आपको मालूम हो जाएगा कि अमीर तैमूर लंग का शिअत या राफ़ज़ियत से काई तअल्लुक़ नहीं था चूंकि वह सय्येदना अमीरे कुलाल के चहीते मुरीद थे और कोई भी राफ़ज़ी किसी भी वली का चहीता नहीं हो सकता। हवाला मुलाहेज़ा फ़रमायें!

बयान किया जाता है कि एक बार हज़रत अमीरे कुलाल जुमे की नमाज़ अदा करने के बाद बुख़ारा से अपने घर जा रहे थे। जब वोह कलाबाद पहुँचे, तो उन्होंने कुछ लोगों को कलाबाद और

फतेहबाद के बीच हरियाली पर बैठे हुए दीनी बातों पर गुफ्तुगू करते हुए देखा और वोह दुर्वेशों के मक़ामात और दरजात, अल्लाह वालों की करामात और उनकी विलायत के बारे में चर्चा कर रहे थे। इनमें अमीर तैमूर भी थे। जब अमीर तैमूर की नज़र हज़रत अमीरे कुलाल और उनके साथियों पर पड़ी, तो तैमूर ने अपने साथियों से पूछा, यह लोग कौन हैं? बताया गया कि हज़रत अमीरे कुलाल और उनके मुरीदीन हैं। जब अमीर तैमूर ने यह सुना तो वोह तेज़ी से आपके पास आये और अर्ज़ किया कि मैं इस उम्मीद के साथ आपके पास आया हूँ कि आप मुझे कुछ हुक्म दें ताकि हम जैसे लोगों के मन को शांति मिले। यह सुनकर हज़रत अमीरे कुलाल ने कहा कि दुरवेशों की बातें छुपी हुई होती हैं, अपने दम पर कुछ भी कहना हमारा काम नहीं है, हम तब तक कुछ नहीं कहते जब तक हमें अपने बड़ों से इशारा नहीं मिलता। लेकिन आप गफ्लत में न रहें और इन्तेज़ार करें। तुम्हारे मामलात के सिल्सिले में मुझे एक अज़ीम रोशनी दिखाई दे रही है जो तुम तक पहुंचेगी। उसके बाद, हज़रत अमीरे कुलाल घर पहुँचे और खिल्वतनशीन हो गए। फिर बाहर आये और जमाअत के साथ ईशा की नमाज़ अदा की। उसके बाद मशाइख़ बुज़ुरगों की रूहानियत के तुफ़ैल एक इशारा व इत्तेला पुंहची तो आपने अपने एक हमराज़ शेख मन्सूर साकिन ख़रामान को बुला कर कहा कि जलदी से अमीर तैमूर लंग के पास जाओ और उनसे कहो कि वह बिना रुके ख़्वारिज़म चला जाए, अगर वह बैठा है तो उसे खड़ा होना चाहिए और अगर वह खड़ा है, तो उसे जाने दो, क्योंकि बुज़ुरगों की आरवाह ने इशारा दिया है कि पूरी हुकूमत उसके और उसके बच्चों के लिए क़रार दी गई है। जब ख़्वारिज़म क़ब्ज़े में आ जाये तो समरक़न्द की तरफ़ बढ़े। जब शेख़ मंसूर अमीर तैमूर के पास पहुँचे, तो उन्होंने उसे उनका इंतजार करते हुए पाया और जब शेख मंसूर ने उन्हें पूरा संदेश

सुनाया, तो अमीर तैमूर बिना देर किए वहाँ से रवाना हो गये। जब उन्होंने कुछ सफ़र कर लिया तो लुटेरों का एक दल आया और अमीर तैमूर के डेरे को घेर लिया, लेकिन उन्होंने अमीर तैमूर को नहीं पाया न ही किसी ने उनको कुछ बताया। इस प्रकार खुदा ने उसे सल्तनत अता की। जब ख़्वारिज़म से कामयाब हो कर लौटे, तो वे समरकंद में बस गए। यहाँ से, उनकी स्थिति में पल-पल और दिन-प्रतिदिन सुधार हुआ और जीत जारी रही। कहा जाता है कि एक दिन अमीर तैमूर शेख शम्सुद्दीन कुलाल कब्शी के साथ हज़रत अमीर कुलाल से मिलने के लिए आऐ, रास्ते में उन्होंने एक व्यक्ति को देखा, जो हज़रत अमीरे कुलाल से मिलने के लिए एक भेड़ पकड़े हुए आ रहा था। जब वह गांव के पास पहुंचा। कोई व्यक्ति नहीं मिला जो उनको हज़रत अमीर कुलाल के पास ले जाता तो उन्होंने देखा कि अचानक हज़रत अमीरे कुलाल सामने से आए और उन्हें अपने घर ले गए। उन्होंने इस असुविधा के लिए हज़रत अमीर कलाल से माफ़ी मांगी, जिस पर अमीरे कुलाल ने कहा ए भाई! जो लोग किसी दुरवेश की तरफ़ मुतवज्जे होते हैं, वे भटक नहीं सकते। उस आदमी ने भेड़ को हज़रत अमीर कुलाल के सामने पेश किया लेकिन वह उसके हाथ से छूट कर भाग गई। यह देखकर वह आदमी भेड़ को पकड़ने के लिए भागा, जिस पर हज़रत अमीरे कुलाल ने कहा, ए भाई, परेशान मत हो, यह अपने आप आ जाएगी, तब शेख शम्सुद्दीन कब्शी व अमीर तैमूर और यह व्यक्ति खानक़ाह में बैठ गए और भेड़ खुद वापस आ गई और सर जमीन से लगाकर बैठ गई। हज़रत अमीरे कुलाल ने भेड़ को ज़िबह करने और मेहमानों के लिए खाने का इन्तेज़ाम करने का हुक्म दिया। फिर हज़रत अमीरे कुलाल ने फ़रमाया ए शेख शम्सुद्दीन! जो कोई भी खुदावन्दे आलम की ख़ातिर ऐसा कोई काम करता है, जिसका किसी को इल्म न हो तो अल्लाह तआला उसके तमामा कामों में

उसकी किफ़ायत करता है कि इसमें किसी का हाथ शामिल नहीं होता। जब शेख शम्सुद्दीन और अमीर तैमूर ने यह हाल देखा तो उनके कमाल के मोतारिफ़ हुवे और दोनों आपके दामन से वाबस्ता हो गये। और आपने उन्हें अपने फ़रज़ंदी में कुबूल कर लिया और साथ ही उन्हें इजाज़त से सरफ़राज़ किया और अमीर तैमूर के बारे में शेख शम्सुद्दीन को नसीहत की कि वोह उनकी तरबिय्यत में कोई कसर न छोड़ें। इसलिए उन्होंने वही किया, जिसके कारण अमीर तैमूर इतने ऊँचे मक़ाम पर पहुँच गए कि कोई इन्तहा नहीं है। (आहाहिये अमीरे कुलाल पेज 1 से 5)

एक सदी पहले, एक और किताब "क़िबला नुमा उर्फ़ तहक़ीकुल कुलाल" लिखी गई थी, जिसके लेखक जनाब निसार अली शेहरत मरहूम हैं, जो जम्मू–कश्मीर राज्य में पूर्व निदेशक शिक्षा विभाग थे।

इसका भी एक हवाला देखें!

चुनानचे अमीर तैमूर गूरगान आपके (हज़रत अमीरे कुलाल) मुरीद और ख़ादिमे ख़ास थे और आपकी रूहानी मदद से अल्लाह तआला ने उन्हें कई देशों की बादशाहत अता फ़रमाई थी। इसलिए, अमीर तैमूर की औलाद यानी दिल्ली के मुगल बादशाह आपका सम्मान करते रहे और समय–समय पर आपकी औलाद जो भारत आती रही उनको शाही दरबार से जागीरें मिलती रही हैं" (क़िबला नुमा उर्फ तहक़ीकुल कलाल पेज 2)

सय्येदना हज़रत अमीर कलाल की नवाज़िशात और इनायात एक राफ़ज़ी पर क्यों होंगी?, एक राफ़ज़ी उनका मुरीद क्यों बनेगा? और अगर काई राफ़्ज़ी किसी अल्लाह वाले से मुरीद हो जाये तो मुरीद बनने के बाद राफ़ज़ियत कहाँ रह सकती है? अमीर तैमूर को शिया और राफ़्ज़ी कहना भी एक खुला यज़ीदीवाद है। आजकल जाहिलों को अल्लामा और इमाम कहा जाने लगा है और उन जाहिलों की लिखी

बातों को आसमानी बातें मान लिया जाता है। इस दौर में, तज़िया शरीफ़ की बुराई वोही करेगा जिसकी आंख यज़ीदे पलीद से लड़ी हो।

सुन्नी मुसलमानों को इन यजीदियों से सावधान रहना चाहिए जो तज़िया शरीफ के ख़िलाफ़ ज़हर उगलते हों और अमीर तैमूर को राफ़्ज़ी या शिया कहते हों।

सैयद मोहम्मद इन्तिसाब हुसैन कदीरी अशरफ़ी मदारी
क़दीरी दारुल इफ़्ता मरकज़े अहल ए सुन्नत जामिया
क़दीरिया, मोहल्ला किसरोल मुरादाबाद शरीफ़

....

और यहाँ तक लिख मारा है कि यज़ीद के महल में क़त्ले हुसैनी का जश्न मनाया गया था और वहाँ ढोल ताशे बजे थे लिहाज़ा यह आशिक़ाने हुसैनी यज़ीदे पलीद की सुन्नत पर अमल करते हैं। और इस एतेमाद से लिखा है जैसे यह भी बज़्मे यज़ीदे पलीद में बहैसियत वर्कर मौजूद था और लन्गाड़ा इसी के गले में लटका हुआ था।

कितना संगीन इल्ज़ाम है आशिक़ाने हुसैनी पर और उश्शाक़े हुसैनी को राहे हुसैनी से फ़िसलाने का क्या ही शातिराना अन्दाज़ है। अगर यज़ीद के यहाँ यह सब कुछ हुआ भी था खूब शादियाने बजे थे और यह आज के यज़ीदी चश्मदीद गवाह भी हैं तो वोह पलीद जाने या उसके हिमायती।

हम तो माहे मोहर्रम का चांद नज़र आते ही ढोल इसलिए बजाते हैं कि पूरी दुनिया को करबला के जुल्म की दास्तान मालूम हो जाये कि दुनिया में यहूद व नसारा भी रहते हैं इब्ने सबा के चमचे भी रहते हैं। कलमाए तय्येबा पढ़ने वाले भी ऐसे होते हैं कि जिसका कल्मा पढ़ते हैं उसकी आल को तहे तेग़ भी करते हैं।

वोह कलमा गो थे जो आले नबी को कत्ल किया
वोह कलमा गोई हक़ीक़ी भी थी, सवाल यह है ?

नमाज़ में नुमाईश के तौर पर जिन पर दुरुद शरीफ़ पढ़ते हैं मैदाने करबला में उन्हीं पर तेगे सितम भी चलाते हैं और भूख व प्यास में तड़पा तड़पा के क़त्ल करने का कमीनापन भी करते हैं।

वोह कौनसा साहिबे ईमान है जो यज़ीदी नियत से ढोल बजाता है कि बहुत अच्छा हुआ कि नबी के लालों का क़त्ले आम हो गया, बहुत अच्छा हुआ कि नस्ले रसूल तबाह व बर्बाद हो गई, फ़ातमी शहज़ादे को बेबसी और बेकसी और दशते गुरबत नसीब हुआ। सच्चाई यह है कि हुसैनी जियालों का ढ़ोल बआवाज़े बुलन्द ऐलान करता है कि यज़ीदी हुकूमत ढोल का पोल थी, यज़ीदी मिशन ढोल का खोल है।

ऐलान के लिये ढोल बजाना अज़ रोए शरीअत जाइज़ है

सय्येदना सुल्तानुल हिन्द गरीब नवाज़ अजमेरी रज़ियल्लाहु अन्हु के आस्ताना ए आलिया पर 1 रजब को उर्स का ऐलान ढोल ताशे से होता है और ढोल ताशा ही बजाया जाता है। तमाम दुनिया का मुसलमान इस ऐलान को लगभग आठ सौ साल से सुन रहा है देख रहा है। सय्येदना हुज़ूर मख़दूम अलाउद्दीन साबिरे पाक कल्यरी रज़ियल्लाहु अन्हु के यहाँ भी ऐलाने उर्स शरीफ़ ढोल ताशे के साथ ही होता है जो आज भी जारी है। आइये हवाले के लिए और देखें कि ऐलान के लिए ढोल बजाना अज़ रोऐ शरीअत कैसा है।

हवाला : नौबत बजाना अगर तफ़ाखुर के लिए हो तो नाजाइज़ है और लोगों को इससे मुतानब्बे करना मक़सूद हो नफ़ख़ाते सौर याद दिलाने के लिए हो तो तीन वक्तों में नौबत बजाने की इजाज़त है, बादे असर, बादे इशा और बाद निस्फ़ शब, कि इन औक़ात में नौबत को नफ़ख़े सौर से मुशाबहत है। यह नियत बहुत अच्छी है। अगर नौबत बजवाने वाले को भी इसका ध्यान हो और काश सुनने वाले को भी नौबत की आवाज़ सुनकर नफ़ख़ाते सौर याद आयें, मगर इस ज़माने में ऐसे लोग कहाँ, यहाँ नौबत

से मकसूद धूमधाम और शादी ब्याह की रौनक व ज़ीनत है।

(बहार शरीअत जिल्द 16 सफ्हा 110–111)

हवाला : ईद के दिन और शादियों में दफ़ बजाना जाईज़ है जबकि सादे दफ़ हों इसमें झांझ न हों और क़वाइदे मौसीक़ी पर न बजाये जायें यानि ढब ढब की बेसुरी आवाज़ से निकाह़ का ऐलान मकसूद हो। लोगों को बेदार करने और ख़बरदार करने के इरादे से बिगुल बजाना जाइज़ है जैसे ह़माम में बिगुल इसलिए बजाते हैं कि लोगों को इत्तला हो जायह कि ह़माम खुल गया। रमज़ान शरीफ़ में सेह़री खाने के वक़्त बाज़ शहरों में नक़्क़ारे बजते हैं जिससे यह मक़सूद होता है कि लोग सेह़री के लिए बेदार हो जायें और उन्हें मालूम हो जाये कि अभी सेह़री का वक़्त बाक़ी है, यह जाइज़ है कि यह सूरत लेहवो लअब में दाख़िल नहीं। (बहारे शरीअत जिल्द 16 सफ़्हा 111 + क़ानूने शरीअत जिल्द 2 सफ़्हा 221)

यह फ़िक़ह की किताबें हैं इन में मुतअद्दद कुयूद के बावजूद बराये ऐलान व इत्तला नौबत बजाने, दफ़ बजाने, बिगुल बजाने, नक़्क़ारा बजाने को जाइज़ ही बताया गया है।

ऐलाने हुसैनी में ढोल के इस्तेमाल को नाजाइज़ कहने वाले कहाँ कहाँ ढोल बजाने और बजवाने की फ़िक्र में हैं इसको पढ़िये। अज़ान जो नमाज़ से पहले होती है इसके मायने ऐलान व इत्तला के हैं और अज़ान व इक़ामत के दरमियान जो तसवीब होती है जिसको उर्फ़े आम में सलात भी कहते हैं इस तसवीब के क्या मआना हैं ? पढ़ये:

हवाला : तसवीब के मआना हैं एक इत्तला के बाद दूसरी इत्तला देना। मतलब यह है कि आज़ान जो बज़ाते खुद जमाअत की इत्तला है इसके बाद नमाज़ियों को जमाअत की तय्यारी की इत्तला दी जा सकती है। यह सूरतेहाल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबा ऐ कराम के मुकद्दस वक़्त

में नहीं थी मगर क्यूंकि उमूमन लोगों में सुस्ती पैदा हो गई है। इसलिए यह सूरत जाइज़ क़रार दी गई है। इसका हासिल यही है कि जमाअत के तय्यार होने की इत्तला मुनासिब तरीक़े पर दे दी जाये। (नूरूल इसबाह़ सफ्हा 45)

इस हवाले का मक़सद यह है कि अज़ान और तकबीर के दरमियान एक और ऐलान कर दिया जाये और नमाज़ियों को इत्तला दे दी जाये, इस ऐलान व इत्तला को तसवीब कहते हैं और जमाअत तय्यार होने की यह इत्तला मुनासिब तरीके से मुस्लमानों को दे दी जाये, वोह मुनासिब तरीके क्या क्या हो सकते हैं इसको भी ग़ौर से पढ़िये।

हवाला : अस्ल इस बाब में यह है कि अज़ान और नमाज़ के दरमियान लोगों को नमाज़ के लिए बुलाने और जमा करना (किसी मुतआरफ़ ज़रिये से) मशाईख़ व अइम्मा ने बाज़रुरत जाइज़ बल्कि (1) मुस्तह़सन क़रार दिया है जिसको इस्तेलाह़ में तसवीब कहते हैं क्यूंकि मुस्लमानों में रोज़ अफ़ज़ूँ ग़फ़लत इसकी मुताक़ाज़ी है कि बार–बार तम्बीह की जाये और इस तम्बीह के लिए मशाईख़ रहमहुमुल्लाह ने कोई ख़ास तरीक़ा मुक़र्रर नहीं फ़रमाया बल्कि (2) हर ज़माने और हर जगह के उर्फ़ पर छोड़ा है कि जो चीज़ लोगों में मुतआरफ़ हो जाये वोही हर जगह अम्ल में लाई जाये और बऐनिही ऐसा है जैसे रमज़ाने मुबारक में इब्तेदा और इन्तहाऐ सहर के लिए हर शहर व कस्बे में अपने उर्फ़ के मुवाफ़िक़ मुख़तलिफ़ सूरतें इख़तियार की जाती हैं। कहीं घण्टा बजाते हैं, कहीं नक़्क़ारा तबल, कहीं गोला व तोप छोड़ी जाती है और उमूमन फ़ुक़हा ने इसको जाइज़ व मुस्तह़सन क़रार दिया है। इला आख़िरिही। (फतावा ऐ दारुल उलूम देवबंद जिल्द अव्वल व दोयम सफ़्हा 70)

तसवीब (सलात) का तफ़सीली मसअला „नवाफ़िले इन्तेख़ाब उर्फ़ अज़ान व अक़ामत के दरमियान तसवीब„ और "जामे मदारी

शरीफ" के बाबुत्तस्वीब में मुलाहिज़ा फ़रमायें। मगर यहाँ यह जानते चलिए कि मज़कूरा इबारत में जमाअत की तय्यारी की इत्तला और ऐलान के लिए मस्जिद में घण्टा भी बजाया जा सकता है और नक़्क़ारा व तबल भी, अब इस सिलसिले में किसी भी हेरफेर को हम बरदाशत नहीं कर सकते, हम तो ढोल ताशे के ज़रिये प्यारे नबी के प्यारे नवासे की कुर्बानियों और उनके ईसार, दीन नवाज़ी का ऐलान करते हैं, जो बिला शुबा जाइज़ ही नहीं बल्कि मुस्तहब और कारे ख़ैर बाइसे अजर व सवाब है।

अब खुद प्यार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमाने आलीशान भी मुलाहिज़ा कर लिया जाये तो आपको हक़ीक़ी इरफ़ान मिलेगा कि ऐलान के लिए दफ़ बजाना हुक्मे रसूल है।

हदीस शरीफ़: सय्यहदतना उम्मुल मोमिनीन हज़रते आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से मरवी है उन्होंने ने फ़रमाया कि प्यारे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐलान करो तुम इस निकाह का और किया करो तुम निकाह मस्जिदों में और बजाओ इस मौके पर दफ़ों को। (तिरमिज़ी शरीफ़)

हदीस शरीफ़: सय्येदना हज़रते मोहम्मद बिन हातिब रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है उन्होंने फ़रमाया कि फ़रमाया प्यारे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कि फ़र्क़ निकाहे हलाल और निकाहे हराम के दरमियान दफ़ बजाने और आवाज़ है निकाह में। (निसाई शरीफ़)

इन दोनों अहादीसे करीमा की रोशनी में बात बिल्कुल साफ़ हो गई कि ऐलान के लिए दफ़ का बजाना हुक्मे रसूल है। दफ़, तब्ला, यह तमाम के तमाम ऐलान में दुरुस्त हैं। गुलामाने हुसैनी इन के ज़रिये ऐलान व तशहीरे जिक्रे शहादते हुसैनी करते हैं, माहौल को गरमाते हैं जो बिलाशुबह सवाब का काम है। माहे मुहर्रम के पहले अशरे में ढोल ताशा बजाने का रिश्ता यज़ीदे पलीद से जोड़ना यह यज़ीदयों की सोची समझी स्कीम का एक

तारीक हिस्सा है और माहे मुहर्रमुल ह़राम के पहले अशरे में ढोल ताशा बजाना बराऐ ऐलाने जिक्रे शहादते हुसैनी हुसैनियों की सोची समझी अकी़दतों से आरास्ता दीन व सुन्नियत की दूधिया चांदनी में नहाई स्कीम का रोशन हिस्सा है।

मुस्लमान घरों में हों और जहाँ अशरा ऐ मुहर्रम में ढोल ताशे की आवाज़ आई आशोकाने हुसैनी बेताबाना इश्क़ो अकी़दत का नज़राना लिये ताज़िया शरीफ़ देखने को घरों से बाहर आ जाते हैं और ताज़िया शरीफ़ की ज़्यारत करते हैं और आंसुओं का ख़िराजे अकी़दम पेश करते हैं। चुनांचे आशिके़ पन्जतन सय्येदना हुजूर हाफ़िज़ हाजी वारिस अली शाह देवा शरीफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु व दीगर अकाबिरीने मिल्लत का यही अन्दाज़े आशिका़ना उनकी सीरत व हयात पर मुशतमिल किताबों में मौजूद है।

यज़ीदी तशहीरे हुसैनी को रोकें और जितना ज़ोर है सब लगा दें वोह नाकाम व नामुराद ही रहेंगे। गुज़िशता सौ साल का तर्जुबा शाहिद है कि यजीदी सूरमाओं ने घोड़े खोल लिए मगर अपने यज़ीदी मिशन में कामयाब न हो सके कि गुलामाने हुसैनी फ़िदायाने आले रसूल अपने हुसैनी मिशन में लगे हुए हैं और इश्के़ हुसैनी के चिराग रोशन किए हुए हैं।

सय्येदना हज़रत शाह सय्यद अब्दुर्रज़्ज़ाक़ बांसवी रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया :

ताज़िया को कोई यह न समझे कि महज़ कागज और पन्नी का बना हुआ है बल्कि अरवाहे मुकद्दसा शुहदाऐ करबला की तवज्जो ख़ास होती है।

(करामाते रज़्ज़ाकिया, दीने मुहम्मदी व ताज़ियादारी)

ह़ज़रत अल्लामा मौलाना सलामत अली देहलवी तिल्मीज़े रशीद सय्येदना हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया :

खुदा का शुक्र है कि ताज़ियादारी आसारे इस्लाम में है और एक

आलम बहुत सी वज्हों से बेहरावर होता है और इससे दीनी फ़ायदे हासिल होते हैं। (तबसिरतुल ईमान,दीने मोहम्मदी और ताज़ियादारी)

आरिफ़े यगाना सय्येदना हज़रत मौलाना शाह नियाज़ अहमद बरेलवी रज़ियल्लाहु अन्हु जो जलीलुल्क़द्र बुज़ुरगाने दीन में से हैं आपकी सीरते तय्येबा ताज़िया शरीफ़ से मुताअल्लिक़ क्या दर्स देती है इसे पढ़िये और वज्द कीजिये :

शबे आशूरा में दो बजे ताज़ियों की ज़्यारत को तशरीफ़ ले जाते और पाँच सात ताज़ियों की ज़्यारत करके वापस आते, अख़ीर उम्र में जब चलने की ताक़त न रही तो हज़रत मुस्तग़रक़ बैठे थे कि सूरते नूरानी हज़रते फ़ातेमा ज़ेहरा सय्येदा रज़ियल्लाहु अन्हा की तशरीफ़ आवरी हुई और फ़रमाया कि मियाँ आज हमारे बच्चों की ज़्यारत को न उठोगे?। हज़रत शाह नियाज़ पर रिक़्क़त तारी हो गई। ख़ुद्दाम को हुक्म हुआ कि हमको ले चलो। अर्ज़ किया हुज़ूर चारपाई पर ले चलें ? फ़रमाया नहीं पैदल ले चलो। चुनांचे ख़ुद्दाम ने दोनों जानिब से बग़लों में कंधा दिया और हज़रत ने पाँच ताज़ियों की ज़्यारत की और अख़ीर उम्र तक आपका यही हाल रहा। एक मर्तबा सूरत के रहने वाले एक आलिमे दीन हज़रत शाह नियाज़ बरेलवी के हमराह हुए, हमेशा की तरह हज़रत की यह आदत थी कि ताज़िया के तख़त को हाथ लगा कर अपने मुँह और क़लब पर फैरते थे मगर इस मर्तबा हज़रत ने ताज़िया के तख़त को बूसा दिया। इस पर मौलवी साहब के दिल पर ख़्याल गुज़रा कि हज़रत ने यह क्या गज़ब किया, हज़रत ने उनके ख़तराते क़लबी पर आगाह होकर उन से ताज़िया देखने को कहा, मौलवी साहब ने देखा कि ताज़िया के दोनों जानिब हज़रते इमामे हसन और हज़रते इमामे हुसैन अला नबिय्येना व अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम तशरीफ़ रखते हैं, एक का लिबास सब्ज़ और दूसरे का सुर्ख़ है। मौलवी साहब को ताबे मुशाहदा न हुआ, गिर पड़े और उन पर

ALL INDIA MISSION MORADABAD MISSIONMOJADDID MORADABAD

बेहद रिक्क़त तारी हो गई, यहाँ तक कि लौटने लगे। हज़रत वहाँ से दूसरे ताज़िये की तरफ़ तशरीफ़ ले गये।

(करामाते निज़ामिया, मुखज़नुल ख़ज़ाइन सफ्हा 336,दीन मुहम्मदी और ताज़ियादारी)

इन जैसी बहुत सी शहादतें हज़राते उलामाऐ केराम व औलियाऐ एज़ाम की मौजूद हैं जिन्होंने ख़्वाब में नहीं बल्कि बैदारी में, बेहोशी में नहीं बल्कि होश व हवास की दुरुस्तगी में दिल की आंखों के साथ-साथ माथे की आंखों से ताज़िया शरीफ़ को हज़राते हसनैन करीमैन को कांधा देते मुलाहिज़ा फ़रमाया है।

अभी यज़ीदियों के तरकश में एक तीर और भी बाक़ी है। वोह यह कि इन कश्फ़ व करामात से इस्लाम का कोई मसअला साबित नहीं किया जा सकता। तो इन तमाम यज़ीदियों को फ़क़ीरे क़दीरी का सुझाव है कि बिलाशुबा कश्फ़ व करामात से दीन के किसी मसअले का सुबूत तो नहीं हो सकता मगर दीन के किसी मसअले की ताईद व तसदीक़ ज़रुर हो सकती है और इसकी किसी को मजाले इन्कार न होगी। चुनांचे कुरआने करीम और फुक़हा से इस्तेदलाल करते हुए जब ताज़िये का जवाज़ व इस्तेहबाब साबित कर दिया तो इसकी मज़ीद तस्दीक़ व ताईद कश्फ़ व करामात से भी कर दी और इन ख़ासाने खुदा के मामूलात से भी, चूँकि ख़ासाने खुदा के मामूलात भी खुदा रसीदा होते हैं। क्यूंकि इन्हीं मामूलात से इन्हें खुदा रसी मिलती है। इस हकीकत को भी कुरआने करीम की रोशनी में मुलाहिज़ा फ़रमायें। इरशादे रब्बे क़दीर है:

(तरजमा) और पैरवी कर तू रास्ते की उसके जो पहुँच गया मुझ तक। (बसीरतुल ईमान सफ्हा 994)

कुरआने करीम की इस सराहत के बाद किसी को पूँ पाँ का मौक़ा नहीं है। ख़ासाने खुदा की पैरवी उनकी इत्तेबा उनके नुकूशे क़दम को चूमना अल्लाह तआला तक पहुँचने का खास ज़रिया है। ख़ासाने खुदा ने ताज़िया शरीफ़ से किस क़दर वाबस्तगी का

मुज़ाहरा फ़रमाया है इसका अन्दाज़ा इससे लगाया जा सकता है। शेख़े आज़म हज़रत अल्लामा शाह सय्यद मोहम्मद इज़हार अशरफ़ साहब अशरफ़ी जीलानी सज्जादानशीं किछौछा शरीफ़ ने अशरफ़ी हाऊस मुरादाबाद शरीफ में ऐक वाक़ेआ ब्यान फ़रमाया कि वली ए कामिल हज़रत शाह सय्यद शहबाज़ भागलपुरी रज़ियल्लाहु अन्हु ताज़िया शरीफ़ के ख़िलाफ़ थे मगर भागलपरु में ताज़ियादारी धूमधाम से होती थी, भागलपुर के अक्सर साकिनान आपके मुरीद थे। दसवीं मुहर्रम थी एक मुरीद ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर ताज़ियादारी आपके मुरीदीन ही करते हैं और आप उसके ख़िलाफ़ हैं, इसको हुक्म देकर बन्द करा दीजिए। आपको जलाल आ गया और अपना लठ लेकर चल दिए कि आज सारे ताज़ियों को तोड़ डालूँगा, मगर जब ताज़ियों के करीब पहुँचे तो आपकी आँखों का सागर छलकने लगा और आप हाथ बांध कर खड़े हो गये और आप ने भी ताज़ियों को कांधा दिया। जब ताज़ियों का जुलूस गुज़र गया तो उसी मुरीद ने अर्ज़ किया कि आप तो ताज़ियों को तोड़ने गये थे मगर आप पैकरे अदब बन कर ताज़ियों की ज़्यारत में मसरुफ़ हो गये? तो सय्येदना हज़रते शहबाज़ ने फ़रमाया कि मैं तो अपने प्रोग्राम ही से गया था, मगर मैं क्या करूँ कि मैंने देखा कि सय्येदना सय्यदुश्शुहदा इमामे आली मक़ाम शहीदे आज़म हुज़ूर इमामे हुसैन अलैहिस्सलाम जुलूसे ताज़िया के साथ खुद चल रहे हैं। जब दादा जान कांधा दे रहे थे तो पोते ने भी कांधा दे दिया और मैंने फ़ैसला कर लिया कि कभी ताज़ियों की मुख़ालफ़त नहीं करुँगा।

(निदाऐ अहले सुन्नत वीकली, 21 फरवरी 2003)

यह वाक़ेया बयान के वक़्त फ़क़ीरे क़दीरी के अलावा अज़ीज़ी शेर बेशाऐ अहले सुन्नत अल्लामा हाफ़िज़ क़ारी अल्हाज मुफ़्ती सय्यद मोहम्मद इन्तेसाब हुसैन क़दीरी अशरफ़ी मदारी (मोहतमिम)

मरकज़े अहले सुन्नत जामेआ क़दीरया मुरादाबाद शरीफ, मुहसिने अहले सुन्नत जनाब अल्हाज हाफ़िज़ मोहम्मद मुसलिम अशरफ़ी एक्सपोर्टर व दीगर मुसलमानाने अहले सुन्नत मौजूद थे।

इस रुहानी सिलसिले की एक कड़ी और भी मुलाहेज़ा फ़रमा लीजिए कि खासाने खुदा ने ताज़िया शरीफ़ से किस कदर अक़ीदत का मुज़ाहरा फ़रमाया है कि गुर्जुगान दीन ने बड़ी पाबन्दी के साथ ताज़ियों की ज़्यारत का एहतेमाम फ़रमाया है, चुनांचि :

सय्येदना ताजुश्शुरफ़ा हुज़ूर किब्ला ए आलम अल्लामा सय्यद मौहम्मद अब्दुल रशीद मियाँ नबीरा ए सय्येदना हुज़ूर अल्लाहु मियाँ रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि सय्येदना ताजुलउरफ़ा गौसे ज़माँ अल्लामा शाह सय्यद मोहम्मद अब्दुल बसीर मियाँ उर्फ अल्लाहु मियाँ रजियल्लाहु तआला अन्हु पीलीभीत शरीफ़ शबे शहादत (दसवीं रात) को बादे नमाज़े इशा गुस्ल फ़रमाते और नये कपड़े ज़ेबे तन फ़रमाते और खुशबू इस्तेमाल फ़रमाते और अपने शहज़ादा ऐ वाला शान और खुलाफ़ाऐ कराम और मुरीदीन को साथ लेते फ़िर पीलीभीत शरीफ के ताज़ियों की ज़्यारत करते और हर ताज़िये के पास फ़ातेहा शरीफ़ पढ़ते, देर रात को वापस तशरीफ़ लाते, थोड़ा आराम फ़रमाते फ़िर नमाज़े तहज्जुद अदा फ़रमाते।

सय्येदना सरकार अल्लाहु मियाँ, साहिबे तसनीफ़ जबरदस्त आलिमे दीन और आरिफे हक हैं, बहुत सी दरसी किताबों पर आपके क़लमी हवाशी हैं। आपको अज़ आमदनामा ता बुख़ारी शरीफ़ पूरा दर्से निज़ामी मय हवाशी हिफ्ज़ था।

सय्येदना ताजुश्शुरफ़ा हुज़ूर किब्ला आलम रजियल्लाहु तआला अन्हु पीलीभीत शरीफ में बज़रये कार मोहल्ला शेर मोहम्मद से गुज़र रहे थे तो आप ने मुझ फ़कीरे कदीरी से मुख़ातिब होकर फ़रमाया कि इस मस्जिद को पहचानते हो? मैंने अर्ज़ किया कि यही पहचानता हूँ कि मस्जिद है। आपने फ़रमाया कि इस

मस्जिद में दस मोहर्रम शरीफ़ को बाद नमाज़े जुहर सय्येदना ताजुल औलिया हुजूर कुतबे ज़माँ हज़रत अल्लामा अल्हाज शाह सय्यद मोहम्मद अब्दुल क़दीर मियाँ शेहज़ादा ए सय्येदना हुज़ूर अल्लाहु मियाँ रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा इस मस्जिद की फ़सील पर रौनक़ अफ़रोज़ होते और हमें भी अपने साथ लेते और दीगर खुल्फ़ा व मुरीदीन भी हमराह होते और आप फ़सील पर बैठे रहते, इसी मस्जिद के आगे से ताज़ियों का जुलूस गूज़रता था, जब जुलूस आता तो आप खड़े हो जाते और ताज़ियों की ज़्यारत फ़रमाते और आँखें बारगाह हुसैनी में खिराजे अकीदत पेश करतीं। जब तक पूरा जुलूसे ताज़िया शरीफ़ न गुजर जाता आप खड़े खड़े ज़्यारत फ़रमाते।

सय्येदना ताजुल औलिया पैकरे इल्म व इरफ़ान थे, आप के साथियों में से एक साथी सय्येदना मखदूमुल उम्मत हजूर मुहद्दिसे आज़मे हिन्द किछोछवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़ाते गरामी भी थी। हुज़ूर ताजुल औलिया को दर्से निज़ामी की अक्सर किताबें हिफ्ज़ थीं।

दुनियाऐ रुहानियत की अज़ीम शख़्सियत आलम पनाह सय्येदना हुज़ूर हाफिज़ हाजी वारिस अली शाह देवा शरीफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का इरशाद व अमल भी मुलाहेज़ा फ़रमायें।

ख़बरदार! ताज़िया को कोई यह न समझे कि खाली कागज़, पन्नी और बांस की खपच्चियों का ढांचा है, मलहूज़ रहे कि अरवाहे कुदसिया सय्यहदुश्शुहदा अला नबिय्येना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम और जुम्ला शुहदा ए करबला इस तरफ़ मुतवज्जे होती हैं। वारिसे पाक आलम पनाह माहे मोहर्रम में ताज़ियाखानों में जाते थे। जब ताज़ियादार ताज़ियों को लेकर चले जाते थे तो हुजूर वारिसे पाक हुजरे के अन्दर तशरीफ़ ले जाते थे, ताज़ियों को देखते वक़्त चेहरा ए अनवर की अजीब हालत मुशाहदे में आती थी और देर तक हुजूरे अनवर आलमे सुकूत

में रहते थे। अशराऐ मुहर्रम और चेहलुम के रोज़ आस्ताना ए आली पर सबील रखी जाती थी, ग़रराऐ मुहर्रम और अशराऐ मुहर्रम तक आप मरसिया भी सुनते थे और अहले बैते किराम की महब्बत और शुजाअत व बहादुरी के तज़करे समाअत फ़रमाते थे। (मिशकाते हक़्क़ानिया सफ़्हा 110)

अगर इसी तरह वाकेआत तहरीर किये जाऐं तो सफ़्हात के हिसाब से तारीख़ की सबसे बड़ी किताब तय्यार हो जाये मगर क़ारिईन की मज़ीद तसल्ली के लिए एक रिवायत और नक़्ल कर दी जाये ताकि बहुत से सवालात का जवाब हो जाये।

इल्म व आगही के आफ़ताब सय्येदना हुज़ूर सदरुल अफ़ाज़िल इमाम सय्यद मोहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी रज़ियल्लाहु अन्हु ताज़िया बनाने में पाबन्दी से चन्दा दिया करते थे और आप ही के मुरीदीन व मोतक़ेदीन व मुतवस्सेलीन अहले मुहल्ला आपके माली तआवुन से ताज़िया शरीफ़ बनाते थे। गुज़िशता साल एक तक़रीब के मौके पर मुझ फ़क़ीरे क़दीरी ने हज़रत मौलाना सय्यद मोहम्मद इज़हारुद्दीन साहब नईमी उर्फ़ हनफ़ी मियाँ सज्जादा नशीं आसताना ए आलिया नईमिया व मुतवल्ली जामेआ नईमिया व ख़ल्फ़े असग़र हुज़ूर सदरूल अफ़ाज़िल से दर्याफ़्त किया कि क्या हुज़ूर सदरूल अफाज़िल ताज़िया बनाने में चन्दा देकर ताज़िया साज़ी में शरीक होते थे? तो आप ने फ़रमाया कि मेरे वालिदे माजिद (हुज़ूर सदरूल अफ़ाज़िल) हमेशा ताज़िया बनाने में चन्दा देते थे और आप ने अपनी पूरी ज़िन्दगी में कभी ताज़िये की मुख़ालफ़त न की।

(निदाऐ अहले सुन्नत वीकली, 21 फरवरी 2003)

ताज़िया बनाने वालों की राहों में ऐरा ग़ैरा नहीं बल्कि इल्म का आफ़ताब इरफ़ान का माहताब किरनें और शुआऐं बखेरता है और अपने नक़्द अमल से ताज़िया के जवाज़ व इस्तेहबाब पर मुहरे तसदीक़ सब्त कर रहा है। अब इस ताज़िया शरीफ़ के

हक़ होने में क्या कसर बाक़ी है ?

फ़क़ीरे क़दीरी ने जहाँ तक महसूस किया है ताज़िया शरीफ़ की मुख़ालफ़त में यहूद व नसारा की साज़िश काम कर रही है। क्यूंकि यहूद व नसारा किसी भी ऐसे काम को कुबूल व पसंद नहीं करते जिससे इस्लामी शान व शौकत का मुज़ाहरा हो और मुस्लमानों के दीनी जज़्बात में उभार आये, जज़्बा ऐ जिहाद में जवानी और बेदारी पैदा हो, नबी और आले नबी और असहाबे नबी का वक़ार दिलों में मज़बूत हो। वोह इसके ख़िलाफ़ पिलानिंग करते ही रहते हैं और अपने इन मन्हूस मनसूबों के लिए नक़ली मोलवियों को इस्तेमाल करते हैं और यह फ़ारमूले "साबित नहीं है" "शिर्क व बिदअत है" "फ़िस्क़ो फुजूर है" के ज़रिये मुस्लमानों को अछछे कामों से रोकते हैं और यह भी भूल जाते हैं कि हमारे बुजुरगों का क्या किरदार है और उन्होंने किस सिराते मुस्तक़ीम पर चलकर मन्ज़िले मक़सूद को पाया है।

मकन्पुर शरीफ़, अजमेर शरीफ़, कलियर शरीफ़, देहली शरीफ़, किछोछा शरीफ़, मारेहरा शरीफ़, देवा शरीफ़, पीलीभीत शरीफ़ और मुरादाबाद शरीफ तमाम ही खानकाहों में ताज़ियादारी पूरी अकीदत व नियाज़मन्दी के साथ जारी व सारी है।

बाज़ ख़ानक़ाहें ऐसी भी हैं जिन्हें यज़ीदी "लू" लग गई है और वोह ताज़ियादारी की सआदत से महरुम हैं और कुछ ख़ानक़ाहें हैं जो ताज़िया शरीफ़ की मुख़ालफ़त में सरगर्म अमल हैं और ताज़िया शरीफ़ के ख़िलाफ़ अलमे बगावत बुलन्द किए हुए हैं। अभी चन्द साल क़ब्ल फ़क़ीरे क़दीरी के मुरीदों में से एक सवाल आया। फ़क़ीरे क़दीरी ने जल्दी में एक जवाब लिखा था जो निदाऐ अहले सुन्नत वीकली में छप चुका है। जिसको पूरे मुल्क में फ़ोटो स्टेट कराकर लाखों की तादाद में तक़सीम किया गया है। वोह सवाल और फ़तवा भी नज़रे कारेईन है।

क्या फ़रमाते हैं उलमाऐ दीन व मुफ़तियाने शरए मतीन इस

बारे में कि

(1) सय्येदना हुजूर इमामे आली मक़ाम शहीद ए आज़म हज़रते इमामे हुसैन अलैहिस्सलाम के जश्ने शहादत के ऐलान व तशहीर के लिए ताज़िया बनाना ढोल बजाना कैसा है ?

(2) ताज़िया शरीफ़ के सामने हुजूर इमामे आली मक़ाम शहीदे आज़म व दीगर हज़राते अम्बिया ए किराम व औलिया ए एज़ाम व कुल मोमिनीन व मोमेनात के लिए ईसाले सवाब व फ़ातेहा करना कैसा है?। बाज़ लोग इसको मना करते हैं और कहते हैं कि ऐसा करने से पता नहीं लोग क्या समझेंगे ?

(3) ताज़ियों का ऐहतराम करना कैसा है ?

(4) ताज़ियों का दफ़्न करना कैसा है ?

(5) यज़ीदे पलीद को कैसा समझना चाहिए ? इस सिलसिले में हुजूर इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का क्या मसलक है ? मुफ़स्सल जवाब इनायत फ़रमायें, करम होगा।

गुलामाने कदीरी, मटयाल राज महल जिला साहिबगंज झारखंड

....

अलजवाबः (1) आम तौर पर मुसलमान आपने जल्सों, कान्फ्रेन्स, शादी ब्याह के मौके पर झण्डों, झालरों का ऐहतेमाम करते हैं और मुख़तलिफ़ क़िस्म की सजावट करते हैं और इस का मक़सद सिर्फ़ तशहीर ही होता है ताकि आने जाने वाले समझ जायें कि आज कोई तक़रीब है। जिस मैयार की सजावट होगी उसी मैयार की शोहरत भी होगी। यह सजावट दर्असल परोपैगन्डे की ही एक शक्ल है। आज इस तशहीर पर लाखों रुपया ख़र्च किया जाता है, जलसागाहों को सजाया जाता है, दूर–दूर तक गेट लगायह जाते हैं।

जब हम अपने जल्सों की शोहरत व पबलिस्टी के लिए यह तरीक़ा इस्तेमाल कर सकते हैं तो शेहज़ादगाने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए इन तरीक़ों का इस्तेमाल

कैसे मना हो सकता है?। ताज़िया सय्येदना हुज़ूर इमामे आली मक़ाम शहीदे आज़म हज़रते इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के जशने शहादत की तशहीर का ज़र्रीन और मेहबूब तरीन तरीक़ा है और अस्लाफ़े किबार से चला आ रहा है। आमतौर पर बुर्ज़ुगाने दीन ने इसको कुबूल व पसन्द फ़रमाया है और ताज़ियों की ज़्यारत पूरे एहतेमाम व ऐहतेराम के साथ फ़रमाई है। माज़ी क़रीब में सय्येदना हुज़ूर हाजी वारिस अली शाह साहब देवा शरीफ़, सय्येदना हुज़ूर अल्लाहू मियाँ पीलीभीत शरीफ़, सय्येदना हुज़ूर आलाहज़रत अशरफ़ी मियाँ रज़ियल्लाहु अन्हुम का ताज़ियों की ज़्यारत करना अदबो एहतेराम के साथ मन्कूल है। अकाबिरे मारेहरा शरीफ़ भी ताज़ियों की ज़्यारत को जाया करते थे। सय्येदना हुज़ूर किब्लाऐ आलम मुरशिदे मोहतरम शबीहे सय्येदना हुज़ूर गौसे आज़म हज़रत अल्लामा अल्हाज शाह सय्यद मोहम्मद अब्दुर्रशीद मियाँ रज़ियल्लाहु अन्हु पीलीभीत शरीफ़ ने इरशाद फ़रमाया कि सय्येदी मुरशिदी ताजुल औलिया कुतबे ज़मा हज़रत अल्लामा अल्हाज शाह सय्यद मोहम्मद अब्दुल क़दीर मियाँ पीलीभीती रज़ियल्लाहु अन्हु ताज़ियों की ज़्यारत को तशरीफ़ ले जाया करते थे और आज भी तमाम खानक़ाहों में ताज़ियों का ऐहतेराम होता है। सिवाऐ उन ख़ानक़ाहों के जिन्हें यज़ीदियत की ,लू, लग गई है।

ताज़िये का रिश्ता अमीर तैमूर लंग से जोड़ना यह भी निरी जहालत है क्यूंकि हिन्दुस्तान में उमूमन जो ताज़िये बनाए जाते हैं वोह सय्येदना हुज़ूर इमामे आली मक़ाम हज़रते इमामे हुसैन के रोज़ा ए पाक की शबीह नहीं होते।

दुनिया में शोहरत के लिए तरह–तरह की तरकीबें इस्तेमाल की जाती हैं, कुछ लोग तो अपने जल्सों व इज्तेमाआत की पब्लिसटी के लिए दलीप कुमार के नाम तक का इस्तेमाल करते हैं और वोही लोग जश्ने शहादत के ऐलान के लिए

ढोल बजाने को नाजाइज़ कहते हैं। ऐलान के लिए ढोल ताशा वग़ैरा बजाना भी बिलाशुबा जाईज़ है। इसको मना करना, हराम बताना दीन में खुली मुदाख़लत है **और यज़ीदी जज़्बे का** सामाने तसकीन है और हुसैनियत को मिटाने की एक सोची समझी स्कीम है। अहले सुन्नत के नज़दीक मातम नाजाइज़ व हराम है। सीना कोबी या ढोल ताशे से मातम और ऐलान में जमीन व आसमान का फ़र्क़ है। मुहर्रम शरीफ़ का जो ढोल बजाया जाता है वोह इमामे हुसैन की शहादत की खुशी में नहीं बल्कि ऐलाने हुसैनियत है। यह ढोल ताशा न तो मातम है और न शादियाने के तौर पर बजता है बल्कि यह तो सिर्फ़ ऐलाने जश्ने शहादते हुसैन है।

(2) ताज़िये के सामने अर्वाहे मोमेनीन को ईसाले सवाब करना दुरुस्त है, इसमें किसी क़िस्म की क़बाहत नहीं है। जहाँ तक इस यज़ीदी फ़लसफ़े की बात है कि लोग क्या समझेंगे तो फ़िर मज़ारात व क़बरों पर भी फ़ातेहा पढ़ना छोड़ दें कि ''लोग पता नहीं क्या समझेंगे'' और नमाज़े जनाज़ा भी पढ़ना छोड़ दें कि ''लोग पता नहीं क्या समझेंगे'' कि मुस्लमान मरते ही खुदा हो जाता है और लोग उसे सफ़ेद कपड़ा पहना कर उसके सामने हाथ बांध कर खड़े हो जाते हैं। ,,लोग पता नहीं क्या समझेंगे,, अगर इस यज़ीदी फ़लसफ़े को मान लिया जाये तो दीन से अमान उठ जायेगा। आमाल का दारोमदार नियतों पर होता है हमारी नियत सिर्फ़ शुहादा ऐ करबला और कुल मोमेनीन व मोमिनात को ऐसाले सवाब की है और इसमें **सआदत ही सआदत** है कबाहत का क्या सवाल ?

(3) जिस चीज़ को अल्लाह वालों से निसबत हो जाती है वोह मुअज़्ज़म व महबूब हो ही जाती है। ताज़िया शरीफ़ को हुज़ूर इमामे आली मक़ाम हज़रते इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से निस्बत हो गई कि यह उनका सामाने तशहीर है तो इसकी

ALL INDIA MISSION MORADA BADI
MISSIONMOJADDID MORADABADI

तशहीर करना ईमान वालों के लिए ज़रुरी हो जाता है। जो दरयाँ, चादरें महफ़िले मीलाद शरीफ़ में बिछाई जाती हैं उनका भी अदब किया जाता है और जो सफें मस्जिद में बिछाई जाती हैं उनकी भी ताज़ीम की जाती है। लिहाज़ा ताज़िया शरीफ़ को हुज़ूर इमामे आली मक़ाम से निसबत हो गई है इसलिए उसे चूमना, आंखों से लगाना अहले ईमान का तरीक़ा है, बुर्जुगाने दीन ने ताज़ियों की ताज़ीम की है आप भी करें और यज़ीदी मसलक को कुबूल न करें।

(4) ताज़ियों को दफ़्न करना यह भी ताज़ीम की एक शक्ल है, जैसे क़ुरआने करीम के औराक़ जब बोसीदा हो जाते हैं तो उनको गढडा खोद कर या फिर पुरानी क़ब्र में दफ़्न कर दिया जाता है ताकि इन औराक़ की बेहुरमती न हो। ताज़िया को चूँकि सय्येदना हुज़ूर इमामे आली मक़ाम हज़रते इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से निसबत हो गई है लिहाज़ा इसको अगर यूँ ही छोड़ देंगे तो इसकी बेहुरमती हो सकती है। इसलिए इसको गढडा खोद कर दफ़्न कर देते हैं ताकि नबीज़ादों से निस्बत रखने वाले इन कागज़ और खपच्चियों की बेहुरमती न हो। उन मक़ामात का नाम जहाँ ताज़िये दफ़्न होते हैं उर्फ़ में करबला, कहा जाता है इसमें भी कोई शरई क़बाहत व मुमानेअत नहीं है।

(5) यज़ीदे पलीद पक्का बेईमान ख़बीस और शैतान था। यज़ीदे पलीद के सिलसिले में हज़रते इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की कोई तहरीर फ़क़ीरे क़दीरी की नज़र से नहीं गुज़री और दीगर अइम्मा ए कराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने इसकी तक्फ़ीर फ़रमाई है।

हुसैनी सुन्नी मुस्लमानों को चाहिए कि खूब जम कर डट कर ताज़िये बनाऐं और शहादते हुसैनी का चर्चा करें और जगह—जगह मजालिसे ज़िक्रे शहादत और लंगर व सबीलों का इहतेमाम

करें और ढके छुपे तमाम यज़ीदयों को उनकी औक़ात बता दें। सय्येदना हुजूर इमामे आली मक़ाम हज़रते इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से अपनी कामिल वाबस्तगी और वारफ़तगी का सुबूत दें और जो भी ताज़िया शरीफ़ की मुख़ालफ़त करता नज़र आये तो समझ लें कि यह यज़ीदी मिशन का आशिक़ है।

मुफ़्ती सय्यद मौहम्मद इन्तेखाब हुसैन
कदीरी नईमी अशरफी मदारी

फ़क़ीर क़दीरी ने किताब ,ताज़िया शरीफ़ का शरई हुक्म, सामाने तशहीरे हुसैनी और ढोल तांशा बराए ऐलाने ज़िक्रे शहादते हुसैनी और नियाज़ व फ़ातेहा की इत्तेला के ताअल्लुक से लिखी है। अगर ताज़ियादारी के ताअल्लुक से कोई नाजाइज़ काम किया जाये जिस पर कुरआने करीम अहादीसे करीमा फ़िक़ाए हन्फ़ी का सरीह हुक्म मौजूद हो उस से मेरा दामन बरी है और हो सकता है कि बाज़ बुर्ज़ुगाने दीन ने किसी मक़ाम पर ताज़ियादारी के नाम पर खुराफ़ात देखी हों और उन खुराफ़ात ही को ताज़ियादारी ख़्याल फ़रमा कर ताज़ियादारी को मना फ़रमाया हो तो इस में उनकी कोई ख़ता नहीं है। उन पर कोई यज़ीदियत का हुक्म न लगेगा। जैसा कि बाज़ जगह ताज़ियों में दुलदुल, बुलबुल, घोड़ा, कबूतर वग़ैरा जानदार की तस्वीरें या मूर्तियाँ बनाईं या लगाई जाती हैं, या गुजरात में लोग बाघ यानि शेर बनाते हैं और आदमी बेहरुपियेपन का मुज़ाहेरा करता है और घरों में छलांग मार कर घुस जाता है, इस क़िस्म की नाजाइज़ हरकात का न तो इस्लाम से कोई ताअल्लुक है और न ही हुजूर इमामे आली मक़ाम से कोई रिश्ता और न ही किसी हुसैनी बुर्ज़ुग ने इसकी ताईद व हिमायत फ़रमाई है और न ही फ़क़ीरे क़दीरी इस क़िस्म की ताज़ियादारी को सही कहता है।

लेकिन नाक पर अगर मक्खी बैठ जाये तो मक्खी को उड़ाया जायेगा, न कि नाक ही को साफ़ करा दिया जाये।

उर्से क़दीरी पीलीभीत शरीफ़ के मौके पर 14 मुहर्रमुल ह़राम 1421 हिजरी में फ़क़ीरे कदीरी ने ताज़िया शरीफ़ के जवाज़ व इसतेह़ाबब पर एक तक़रीर की थी जिसने यज़ीदियत की अर्थी सजा दी और ताज़िया शरीफ़ की मुख़ालेफत को तहतुस्सरा में धकेल दिया और पूरे मुल्क में ताज़िया शरीफ़ का माहौल जगमगाने लगा।

खानवदा ए मदारिया के सदाते किराम जो इल्म व इरफ़ान का संगम हैं। उनका मुझसे बराबर इसरार रहा कि ताज़िया शरीफ़ के मौजू पर क़लम उठाऊँ हुसैनियत का परचम लेहराऊँ और यज़ीदीयत का क़िला क़मा करुँ। मगर कुरआने करीम के उर्दू हिन्दी तर्जमे ,बसीरतुल ईमान, और उर्दू ,तफ़सीरे क़दीरी बदीई मय फ़वाइदे रशीदया की तसनीफ़ व तालीफ़, किताबत व तबाअत और इशाअत की जिम्मेदारियाँ, फ़िर जब इस मरहले से फ़ारिग़ हुआ तो ह़स्बे ऐलान अह़ादीसे करीमा का अज़ीम मजमूआ ,जामे मदारी शरीफ़, जो 6 हज़ार अह़ादीसे करीमा का इन्तेखाब है, फिर हर ह़दीस के अरबी मतन के साथ उर्दू हिन्दी तर्जमा और हर हर ह़दीस शरीफ़ की तशरीह़ का काम शुरु किया।

फिर फ़क़ीर क़दीरी ताजिया शरीफ़ ने क़लम उठाया और तीन दिन में यह किताब मुकम्मल कर दी और इसका नाम "ताज़िया शरीफ़ का शरई हुक्म" रखा।

21 ज़ीक़ादा 1424 हिजरी बुद्ध को बादे नमाज़े फ़जर यह किताब लिखना शुरु की और 23 ज़ूक़ादा 1424 हिजरी जुमा को क़ब्ले नमाज़े जुमा यह किताब मुकम्मल हो गई।

खुदाऐ बसीरो क़दीर अपने प्यारे नबी अशरफ़ो रशीद अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम के तुफ़ैल इस किताब को हुसैनियत के फरोग़ और यज़ीदियत के नेस्त व नाबूद होने में मुआविन बनाये और यह किताब रज़ाऐ हुसैनी का सबबे ज़र्रीन हो और

मेरे जद्दे करीम मेरी इस काविश को पसन्द व कुबूल फ़रमा कर मुझे अपने कुरबे ख़ास, फ़ज़ले ख़ास से नवाज़ें।

सय्यद मौहम्मद इन्तेखाब हुसैन

कदीरी नईमी अशरफी मदारी अफ़ा अनहुल बसीर

बानी मरकज़े अहल–ए–सुन्नत जामिया क़दीरिया

मुरादाबाद शरीफ, यू.पी. इंडिया

....

रब्बे क़दीर के फ़ज़्ल और प्यारे आक़ा अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम के करम से

कुछ ज़रूरी इज़ाफ़ों और ख़ूबसूरत प्रिंटिंग के साथ, यह अज़ीम किताब "ताज़िया शरीफ़ का शरई हुक्म" 30 जून, 2020 मंगलवार, को आप हज़रात को पेश की जा रही है। रब्बे क़दीर मेरी इस कोशिश को अपने प्यारे महबूब अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम के तुफ़ैल कुबूल फ़रमाये और सय्येदना शहीदे आज़म सरकार इमामे आली मक़ाम हुज़ूर इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु व अलैहिस्सलाम के सदक़े हम सभी को सच्ची हुसैनियत पर क़ायम रखे। आमीन

सगे दरबारे हुज़ूर मुजद्दिद मुरादाबादी

सय्यद मोहम्मद इन्तेसाब हुसैन

क़दीरी अशरफ़ी मदारी

सज्जादा नशीन

आसताना ए आलिया क़दीरिया हुजूर मुजद्दिद मुरादाबादी, मोहतामिम मरकज़े अहल–ए–सुन्नत जामिया क़दीरिया, ख़तीब व इमाम व मुतवल्ली तख़त वाली मस्जिद, मोहल्ला किसरौल मुरादाबाद शरीफ़ यू0पी भारत

All India MISSION MOJADDID MORADABADI

उर्से हुजूर मुजद्दिद मुरादाबादी

सय्यदना अमीरे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत
ग़ौसे ज़माँ वलिय्ये कामिल हुज़ूर मुनाज़िरे आज़म
अल्लामा हाफ़िज़ क़ारी मुफ़्ती शाह

सय्यद मोहम्मद इन्तेख़ाब हुसैन

क़दीरी अशरफ़ी मदारी, मुतर्जिम व मुफ़स्सिर व मुहद्दिस मुरादाबादी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का उर्स ए पाक हर साल 19.20.21 शव्वाल को आसताना ए आलिया क़दीरिया हुज़ूर मुज़द्दिद मुरादाबादी मो0 नई बस्ती मुरादाबाद शरीफ़ यू0पी0 में सय्येदना हुज़ूर ख़तीबे आज़म किबला की सरपरस्ती में मुनाक़िद होता है।

जिसमें पहले दिन बादे इशा नातिया मन्क़बती मुशायरा, दूसरे दिन बादे इशा क़व्वाली, और तीसरे दिन बादे ज़ुहर चादरों का जुलूस, बादे असर कुल शरीफ़, बादे इशा मुजद्दिदे मुरादाबादी कान्फ्रेंस होती है, और लंगर तीनों दिन हर वक़्त जारी रहता है।

तमाम मुहिब्बीन व मुरीदीन की उर्स ए पाक में शिरकत ज़रूरी है

अद्दाई

नबीरा ए हुज़ूर मुजद्दिद मुरादाबादी मौलवी हाफ़िज़ क़ारी

सय्यद मो० अेहतेसाब हुसैन क़दीरी अशरफ़ी मदारी

वलीअहद व नायब सज्जादानशीं

आसताना ए क़दीरिया हुज़ूर मुजद्दिद मुरादाबादी

मोहल्ला नई बस्ती मुरादाबाद शरीफ़. पिनः *244001*

मोबाइलः 9456885786..9568357786

All India Mission Mujaddid Moradabadi
MISSIONMUJADDID MORADABADI

मरकज़े अहले सुन्नत जामेआ क़दीरिया

तख़्त वाली मस्जिद किसरौल मुरादाबाद शरीफ़

सय्यदना अमीरे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत हुज़ूर मुनाज़िरे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का क़ायम फ़रमाया हुवा मदरसा है जहाँ सय्येदना हुज़ूर ख़तीबे आज़म किबला की सरपरस्ती में शानदार तालीम के साथ साथ बहतिरीन तरबिय्यत भी होती है। तलबा के खाने व रहने का इन्तेज़ाम भी मरकज़े अहले सुन्नत ही करता है।

रमज़ाने मुबारक व ईदे कुरबाँ के मौके पर मरकज़े अहले सुन्नत जामेआ क़दीरिया की माली इमदाद फ़रमा कर अजरे अज़ीम हासिल फ़रमायें।

अपील कर्दा

नबीरा ए हुज़ूर मुजद्दिद मुरादाबादी मौलवी हाफ़िज़ क़ारी

सय्यद मोहम्मद अेहतेसाब हुसैन

क़दीरी अशरफ़ी मदारी

नाज़िमे आला मरकज़े अहले सुन्नत जामेआ क़दीरिया मुरादाबाद शरीफ़

माहाना 21वीं शरीफ़

हर महीने चांद की 20 तारीख़ को 21 वीं शब में आसताना ए क़दीरिया मो० नई बस्ती मुरादाबाद शरीफ़ में सय्यदना अमीरे अहले सून्नत हुज़ूर मुजद्दिद मुरादाबादी की माहाना 21 वीं शरीफ़ मुनाकिद होती है। शिरकत फ़रमायें।

सय्यद मो० कामयाब हुसैन क़दीरी अशरफ़ी मदारी

नाज़िम आसताना ए क़दीरिया हुज़ूर मुरद्दिद मुरादाबादी